Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मो विजयतेतराम्

धर्म जिज्ञासा

(खण्ड काव्य)

:- रचयिता :-

आचार्य कृष्ण कुमार मिश्र
"चंचल"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म-जिज्ञासा (खण्ड काव्य)

रचयिता- आचार्य कृष्ण कुमार मिश्र "चंचल"

दूरभाष- 9760354031

प्रकाशक- हिन्दी साहित्य संगम बिलसंडा (पीलीभीत)

मुद्रक- गुप्ता ऑफसेट प्रैस, बीसलपुर

प्रथम संस्करण- संवत 2065 वि०

सहयोग राशि- 50/- रू० मात्र

सर्वाधिकार रचयिता के अधीन

पुस्तक प्राप्ति स्थान- दिलीप बुक डिपो

बिलसण्डा (पीलीभीत)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषयानुक्रमणिका

पृष्ठ सं0

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवरण-छन्द

काम्यकवन में बसें, द्वैतवन–
पाण्डव कभी विचरते ।
'वन में बनते हैं चरित्र,
वन–मध्य सदैव निखरते ।।1।।

जो सबको प्रिय है, जिसको–
प्रियतम लगता जग सारा ।
वही आर्य, सत्पुरूष वही है,
प्रभु का वही दुलारा ।।2।।

जो सुख – दुख – द्वन्द्वों में,
विजय–पराजय, प्रिय–अप्रिय में ।
भूत – भविष्यत् – वर्त्तमान में,
दृढ़ है निज निश्चय में ।।3।।

निस्पृह–शान्त, प्रसन्न सर्वदा,
योगी सतत् अकामी ।
सुधी जितेन्द्रिय, ब्रह्मचर्यरत,
है धनिकों का स्वामी ।।4।।

धर्म तत्व अति गूढ़, सूक्ष्मतम,
जिस पर विज्ञ फिसलते ।
वही पन्थ पावन है, जिस पर,
महापुरूष हैं चलते ।।5।।

जो नर धर्म–हितार्थ समर्पित,
अपने प्राण करेगा ।
संकट में आ धर्म स्वयं ही,
उसका त्राण करेगा ।।6।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यावारिधि डॉ0 कैलाशदास वेदान्ताचार्य महाराज
श्रीनिवास कुंज, बिलसण्डा (पीलीभीत)

शुभ-कामना-संदेश

आचार्य मिश्र जी की कृति "धर्म–जिज्ञासा" की पाण्डु–लिपि आद्यन्त पढ़ी । कृति धर्म–जिज्ञासु–जनों की भावनाओं का समाधान करने में अवश्य ही सक्षम होगी, ऐसा मेरा विश्वास है । कृति और कृतिकार के लिए मेरी हार्दिक शुभ–कामनायें ।

शुभेच्छु
"कैलाश दास"

श्रूयतां धर्म सर्वस्वं,
श्रुत्वा चाप्यवधार्यताम् ।
आत्मनः प्रतिकूलानि,
परेषां न समाचरेत् ।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ वन्दे वाणी-विनायकौ ॥

उत्तराखण्ड की उत्कर्ष–पूर्ण ऊर्जा– पोषित ऊर्ध्वरेता–पथ–पथिक विद्वद्वरेण्य श्री मिश्रा जी की कलिकाल–तापित सलिलापेक्षी मीनादिकवत् जिज्ञासु–जनों हेतु समर्पित इस कुम्भोदधि सी सफल कृति से उल्लासित मन वाला मैं कृति और कर्त्ता का वन्दन करता हूं और आप जैसे जिज्ञासु जनों का अभिनन्दन करता हुआ अतिशय आनन्दमग्न हो रहा हूं ।

शुभेच्छु
आचार्य राम श्याम तिवारी "'विनीत"
श्रीमद्भागवत्–कथा–किंकर
रूरा, कानपुर

धर्म के लक्षण

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं,
शौचमिन्द्रिय निग्रहः ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो,
दशकं धर्म लक्षणम् ।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संक्षिप्त कथा सूत्र

यह लघु काव्य महाभारत के "वन पर्व" के उपपर्व "आरणेय पर्व" के "यक्ष–धर्म–उपाख्यान" पर आधारित है । एक याज्ञिक ब्राह्मण के यज्ञीय 'अरणि काष्ठ" को एक मृग अपने सींगों में फँसा कर द्रुत–गति से भागने लगता है । यह याज्ञिक, नृप युधिष्ठिर से यज्ञ पात्र छुड़ा लाने का निवेदन करता है । पाँचों पाण्डव–भ्राता मृग का पीछा करते करते थक जाते हैं किन्तु मृग को नहीं पकड़ पाते हैं । तब तक मध्यान्ह हो जाता है । पिपासाकुल युधिष्ठिर नकुल से जलाशय का पता लगाकर जल लाने को कहते हैं । नकुल जलाशय पर पहुँचकर जैसे ही जल पीना चाहते हैं, एक अदृश्य ध्वनि उन्हें उसके प्रश्नों के उत्तर देकर ही जल पीने को कहती है। नकुल उसकी उपेक्षा कर जल पीने का प्रयास करते हैं किन्तु वे जल पीने से पहले ही मूर्च्छित हो जाते हैं । इसके बाद सहदेव, अर्जुन और भीम भी क्रमशः वहाँ जाते हैं और उसी अवस्था को प्राप्त हो जाते हैं । अन्त में युधिष्ठिर जब वहाँ जाते हैं तो भाइयों को मृतप्राय देखकर विस्मित और शोकाकुल होते हैं । उन्हें भी वही अदृश्य ध्वनि प्रश्नों के उत्तर देकर ही जल पीने के लिए सचेत करती है । युधिष्ठिर अदृश्य के आदेशानुसार उत्तर देने की स्वीकृति देते हैं । अदृश्य (यक्षराज) प्रश्न पूछते हैं और नृपति युधिष्ठिर उनके यथेष्ठ उत्तर देते हैं। अन्त में उनके उत्तरों से प्रसन्न यक्षराज नृप को अपने किसी एक प्रिय भ्राता को जीवित करवाने का अनुरोध करते हैं । युधिष्ठिर जब नकुल के प्रत्युज्जीवन हेतु यक्षराज से कहते हैं तो यक्षराज उनके इस नैतिक–धर्ममय–आग्रह से अत्यधिक प्रसन्न हो जाते हैं और चारों भाइयों को प्रत्युज्जीवित कर देते हैं ।

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युधिष्ठिर के आग्रह पर यक्षराज प्रकट होकर अपना परिचय देते हुए बताते हैं कि वे उनके पिता धर्मराज हैं । अपने पुत्र की धर्म निष्ठा की परीक्षा हेतु ही उन्होंने "अरणि–काष्ठ" अपहरण से अब तक के सारे घटना चक्र की संरचना की है। अन्त में वे पाण्डवों को आशीर्वाद देकर चले जाते हैं ।

विदुषांवशंवद :
आचार्य कृष्ण कुमार मिश्र "चंचल"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
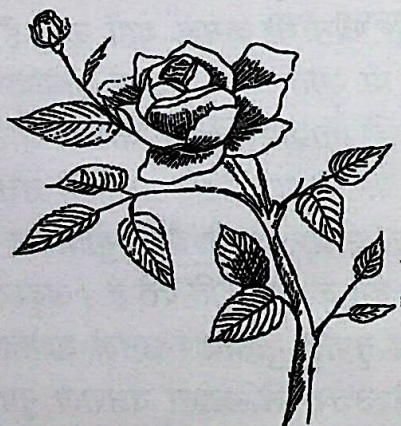
कवि की लेखनी से

इस काव्य "धर्म जिज्ञासा" का वास्तविक आधार महाभारत "वन पर्व" का आरणेय उप पर्व है" । इसमें यक्ष द्वारा युधिष्ठिर से पूछे गये धार्मिक , शास्त्रीय एवं व्यावहारिक प्रश्नों के तर्क पुष्ट उत्तर उपस्थित किये गये हैं । अन्यत्र इन प्रश्नों के उत्तर प्रकारान्तर से भिन्न भी हो सकते हैं । इसमें मूल कथा के अतिरिक्त भी अनेक प्रश्नोत्तर उपस्थित करके पाठकों की धर्म–जिज्ञासा को शान्त करने का लघु–प्रयास किया गया है । साथ ही इस काव्य को मौलिकता प्रदान करने का प्रयत्न भी किया गया है । उत्तरों से यदि किसी का कोई वैमत्य होता है तो मैं विनम्रता पूर्वक "वेदाःविभिन्ना स्मृतयो विभिन्नाः, नासौमुनिर्यस्य मतं न भिन्नम्" के अनुसार इसे मत–वैभिन्न्य एवं प्रस्तुतिकरण के वैमत्य को ही आधार मानूँगा । यदि इस लघु काव्य के द्वारा सुधी सहृदय जिज्ञासु पाठकों का किंचित भी ज्ञान रंजन एवं रसास्वादन होता है तो मैं अपना प्रयास सफल समझूँगा ।

और अन्त में "यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्" के आधार पर विश्व के महानतम इतिवृत्तात्मक धार्मिक महाकाव्य "महाभारत" के प्रणेता "महर्षि वेदव्यास" को कोटिशः सादर वन्दन करता हूँ ।

अन्त में मैं अपने मार्गदर्शक एवं हित चिन्तक स्वर्गीय आचार्य प्रताप नारायण अवस्थी का प्रणाम पुरस्सर अभिनन्दन करता हूँ । अपने अभिन्न सहयोगी प्रिय अनुज "साहित्य श्री मुन्ने बाबू दीक्षित 'शशांक' का मुझे पूर्ण सहयोग एवं प्रोत्साहन मिलता रहा है, जिसके अभाव में काव्य प्रणयन असम्भव ही था । कथाव्यास आचार्य पं0 रामश्याम तिवारी 'विनीत' कानपुर
CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
की शुभ कामनाओं के लिए मैं उनका आभार–ज्ञापी हूँ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यावारिधि सन्त प्रवर डॉ0 कैलाश दास वेदान्ताचार्य जी महाराज की शुभकामनायें इस काव्य प्रणयन में पूर्ण सहायिका रही हैं । काव्य रचना में मेरी पत्नी उर्मिला मिश्रा एम0ए0 (द्वय) साहित्य विशारद का अतर्क्य सहयोग रहा है । इसके अतिरिक्त मैं अपने मुद्रक महोदय का भी आभारी हूँ । जिनके अथक प्रयास से प्रस्तुत काव्य आपके कर कमलों में उपस्थित कर सका हूँ ।

"दयानन्द शतक" एवं "राष्ट्र मन्दिर" के बाद यह मेरा तृतीय काव्य "धर्म–जिज्ञासा" यदि धर्म–जिज्ञासु सहृदय सुधी पाठकों का किंचित् भी अध्यात्म–रंजन कर सका तो मैं अपने प्रयास को सफल समझूँगा। आपके सुझावों का सदैव स्वागत है ।

सधन्यवाद !

मकर संक्रान्ति — किमधिकं बुद्धिमद्वर्येषु–
संवत् 2065 वि0 — आचार्य कृष्ण कुमार मिश्र 'चंचल"

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

धर्म का वास्तविक-स्वरूप-(अंतस)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्व में धर्म के विषय में परस्पर विरोधात्मक धारणाएँ हैं। विभिन्न मत एवं सम्प्रदायों ने धर्म, ईश्वर एवं अपने धर्म–ग्रन्थों के विषय में परस्पर विरोधी प्रचार कर रखा है। यह वास्तविक धर्म के विषय में वस्तुतः एक–पक्षीय आंशिक विचार कहा जायेगा। धर्म वास्तव में एक और सत्य–स्वरूप है! उसे बिभिन्न सम्प्रदायों के चश्मों से देखने पर उसमें भिन्नता दृष्टिगोचर होना स्वाभाविक ही है।

हम सव एक ही ईश्वर को अपना पूज्य और परमपिता मानते हैं। भले ही उसको भिन्न नामों – ईश्वर, खुदा, अल्लाह, गॉड, परमेश्वर, आदि से सम्बोधित करते हों। अस्तु, हम सब एक ही परमात्मा की सन्तान होने के कारण सहोदर भाई–बहिन हैं। उस परमपिता के सृष्टि–नियामक नियम भी सार्वभौम हैं। देश–काल परिस्थिति एवं व्यक्ति–वैभिन्न्य के कारण नियमों में भिन्नताएँ हो सकती हैं, किन्तु विरोध नहीं। उन धार्मिक नियमों एवं संहिताओं में भिन्नता एवं परिवर्तन सम्भव है, जिन्हें हम व्यक्तिगत–धर्म, सामाजिक–धर्म, नैतिक धर्म, कुलधर्म, देश–धर्म, शरीर–धर्म, वर्ण–धर्म, जाति–ध र्म, या आपद्धर्म के नाम से सम्बोधित करते हैं। इनमें परस्पर वैभिन्न्य होते हुए भी कोई विरोध नहीं होता। परस्पर भ्रातृत्व भाव, प्रेम, करूणा, दया, क्षमा, उपकार, सेवा, सम्मान, परस्पर अभिवादन, सदाचरण, अहिंसा, त्याग, तप, पर–पीड़ा–निवारण, सहायता आदि धर्म के सार्व भौम तत्व हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

कोई भी मत, सम्प्रदाय या देश इनका विरोध नहीं करता ।
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अतः धर्म के सिद्धान्त वास्तव में सत्य सार्वभौम, सार्वकालिक एवं सार्वदेशिक हैं । धर्म को मानव–धर्म या विश्व–धर्म कहना ही समीचीन होगा । हिन्दू धर्म, मुस्लिम धर्म, ईसाई–धर्म, खताई धर्म, यहूदी धर्म, पारसी धर्म, सिख धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, वाम मार्ग इत्यादि नामों से सार्वभौम–धर्म को व्यवहृत किया जाना पूर्णतया तर्कसंगत न होगा । यदि ऐसा करते हैं तो हम धर्म के वास्तविक स्वरूप के साक्षात्कार से अभी बहुत दूर हैं । आइये हम धर्म के वास्तविक स्वरूप के विषय में कुछ चर्चा करें ।

'धर्म' शब्द वास्तव में 'धृ धारणात्' और ' डुधाञ् धारण–पोषणयोः' धातुओं से निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ है – धारण–पोषण करने वाला । अर्थात् जिन गुणों को ध ारण करने से उस पदार्थ की स्थिति हो और जिनको त्याग देने से उस पदार्थ का अस्तित्व ही समाप्त हो जाता हो, उस गुण विशेष को उस पदार्थ का धर्म कहेंगे । उदाहरणार्थ 'उष्णता' अग्नि का और 'शैत्य' जल का धर्म होता है । वैसे ही मानवता (प्रेम, अहिंसा, करूणा, दया, सेवा, परोपकार, आदि) मानव का धर्म है । धर्म से कभी भी दूसरों को कोई हानि नहीं हो सकती । हानि और कष्ट तो अधर्म के व्यवहार से होते हैं । धर्म की कतिपय परिभाषाएँ उद्धृत करके हम धर्म के सार्वभौम स्वरूप को सुस्पष्ट करना चाहेंगे–
CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

1– **यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः** (वैशेषिक दर्शन)– अर्थात् जिस कार्य के करने से लौकिक और पारलौकिक सिद्धि हो उसे धर्म कहते हैं ।

2– **चोदना लक्षणो धर्मः** (मीमांसा दर्शन)– अर्थात जो कार्य मानव को अच्छे मार्ग पर चलने की प्रेरणा दे, वह धर्म है ।

3– **धारणात् धर्ममित्याहुः**, धर्मो धारयते प्रजाः (महाभारत)– अर्थात् जिन गुणों को धारण करने से मानव की स्थिति होती हो और न धारण करने से विनाश होता हो, वह धर्म है ।

4. **धर्मो रक्षति रक्षितः** (महाभारत)– अर्थात् जो व्यक्ति धर्म की रक्षा करता है, धर्म भी उसकी रक्षा करता है ।

5. **नहि सत्यात् परो धर्मः**– अर्थात् सत्याचरण से बढ़कर कोई धर्म नहीं है ।

6. **अहिंसा परमो धर्मः** (महाभा0)– अर्थात् प्राणि मात्र को कष्ट न पहुँचाना ही परम–धर्म है ।

7. **परोपकारः पुण्याय, पापाय परपीडनम्** (महाभा0)– अर्थात् दूसरों की सेवा और उपकार करना पुण्य (धर्म) है और दूसरों को कष्ट देना पाप (अधर्म)है ।

8. **आचारः परमो धर्मः** (मनुस्मृति)– अर्थात् सदाचरण ही परम–धर्म है ।

9. **आचार हीनं न पुनन्ति वेदाः** – दुराचारी को वेदों का ज्ञान भी पवित्र नहीं कर पाता ।

10. **आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्** (मनुस्मृति)– अर्थात हम अपने प्रति दूसरों के द्वारा जिस व्यवहार की इच्छा करते हैं, वैसा ही आचरण हमें दूसरों के साथ करना चाहिए, यही सच्चा धर्म है । माला, तिलक, जनेऊ, दाढ़ी, चोटी, टोपी, पगड़ी आदि का धारण करना और विभिन्न पूजा पद्धतियाँ प्रतीकात्मक धर्म हैं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

11. **धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं, शौचमिन्द्रिय निग्रहः ।**
धीर्विद्या सत्यमक्रोधी, दशकं धर्म लक्षणम् । *(मनुस्मृति)*
अर्थात् धैर्य, क्षमा, मन का दमन, चोरी न करना, तन मन आत्मा–वाणी की पवित्रता, इन्द्रियों को वश में रखना, बुद्धि, विद्या, सत्य और क्रोधहीनता का आचरण करना ही धर्म के दश लक्षण हैं ।

12. **सर विलियम जोन्स** *'श्रद्धा' को धर्म कहते हैं ।*

13. **फ्रेजर महोदय** *ने मानव–जीवन को सुमार्ग पर अग्रसर करने वाली व्यवस्था एवं शक्तियों का समाराधन ही धर्म माना है ।*

14. **दार्शनिक कान्ट महोदय** *के अनुसार अपने सुकर्मों को ईश्वरीय आदेश मानना ही धर्म है ।*

15. **स्वामी दयानन्द सरस्वती** *'वेदानुकूल' पक्षपात–रहित न्यायाचरण एवं सत्यपूत ईश्वर की आज्ञा–पालन को धर्म कहते हैं ।*

16. *सत्कर्मों का निष्काम आचरण ही धर्म है ।*

17. **थियोसोफिस्ट मैडम एच०पी० ब्लैवटस्की** *का मत है कि आर्य सामी या तूरानियों में से किसी ने भी नूतन धर्म–तत्व का प्रकाश नहीं किया, अपितु धर्म का प्रचार किया ।*

18. **डॉ. लैंग** *ने चीन के धर्म–प्रचारक कन्फ्यूसियस को भी धर्म– निर्माता न कहकर धर्म प्रचारक कहा है ।*

19. **सर विलियम जोन्स, डॉ० हॉग, डॉ० मैक्समूलर** *के अनुसार सृष्टि–उत्पत्ति के प्रारंभ–काल से कोई भी ऐसा धर्म नहीं हुआ जो सर्वथा नूतन हो ।*

20. **धर्म की धारा वेद** ⇨ *अवस्ता⇨ यहूदी⇨ बौद्ध⇨ ईसाई⇨ इस्लाम की नदियों से होकर वही है ।*

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

21. **जरदुश्थ, कन्फ्यूसियस, मूसा, बुद्ध, ईसा, मुहम्मद, नानक, कबीर, दयानन्द,** इत्यादि अपने समय में धर्म के सार्व–भौम स्वरूप में आई हुई विकृतियों में सुधार करने हेतु धर्माचार्य (पैगम्बर) एवं धर्म–संशोधक के रूप में अवतरित हुए। यथा वैदिक–धर्म में आई हुई विकृति बहुदेववाद को नकार कर एकेश्वरवाद की प्रतिष्ठा–हेतु जरदुस्थ आये । यज्ञों में पशु हिंसा, जातिवाद, दलित उत्पीड़न की समाप्ति हेतु बुद्ध का प्रादुर्भाव हुआ । ईसाई मत के प्रबल अंध–विश्वास एवं मूर्ति पूजा के निरसन हेतु इस्लाम का अवतरण हुआ । इसी प्रकार कबीर, नानक, दयानन्द जैसे धर्म–सुधारकों का उद्‌देश्य भी अंध–विश्वास, मूर्ति पूजा, जातिवाद, बहुदेवतावाद आदि का खंडन और एकेश्वर–वाद का मंडन रहा है ।

22– सभी सम्प्रदाय सार्व भौम धर्म से ही अनुप्राणित हैं । योग–दर्शन के यम–नियम (अहिंसासत्यमस्तेय0........) ही बौद्ध–धर्म के सिद्धान्त हैं और वेही नियम बाइबिल के Exodus (Chap. 20) एवं Deuteronomy (Chap.5) में वर्णित हैं । बौद्ध–धर्म का 'धम्मपद' नीति ग्रन्थ, भगवद्‌गीता का भावानुवाद ही है ।

धर्म की कतिपय मूल विशेषताएँ

1. देश, काल, व्यक्ति, जाति, वर्ग, मत–सम्प्रदाय एवं ग्रनथ विशेष के पूर्वाग्रह एवं पक्षपात से रहित सार्व–भौम–मानवीय–हित की व्यवस्था का नाम धर्म है ।

2. निःस्वार्थ एवं निष्काम भाव से मानव–हितार्थ किया जाने वाला कर्म ही धर्म है ।

3. धर्म शाश्वत, सार्वभौम एवं नैतिक जीवन–मूल्य है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

4. 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की उदात्त–भावना ही धर्म है ।
5. सेवा, प्रेम, करूणा, दया, अहिंसा, भ्रातृ–भाव एवं परहित–साधन ही धर्म का मूल मंत्र है ।
6. मानवता का उदात्त–भाव ही धर्म है ।
7. सदाचरण ही सच्चा धर्म है ।
8. अपने लिए वांछित व्यवहार ही दूसरों के साथ करना उत्तम धर्म है ।

अस्तु, धर्म का ध्येय है विश्व–शान्ति और परस्पर प्रेम । यह तभी सम्भव है जब विश्व के सभी मानव श्रेष्ठ और सदाचारी बनें । आइये, हम सब वैदिक–ऋषि के साथ, सूर्य –चन्द्र के समान धर्म के कल्याण–पथ पर अग्रसर हों–
"स्वस्तिपन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव"

(ऋग्वेद– 5/51/15)

विदुषांवशंवदः
आचार्य कृष्ण कुमार मिश्र
'चंचल'

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म-जिज्ञासा - एक आकलन

मानव–मन सदैव ही जीवन के सामाजिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के विकास में अधिकाधिक जानने की अभिलाषा करता रहा है, क्योंकि इस जिज्ञासा के समाधान के पश्चात ही उसका मनन एवं चिन्तन कर सम्यक् संतुष्टि के उपरान्त ही वह उन्हें अपने जीवन में आत्मसात कर अपना व्यवहार इनके आलोक में निर्धारित करता है । जिज्ञासा के समाधान के उपरान्त ही विचारों में दृढ़ता आती है, और मनुष्य का जीवन सहज एवं सरल हो जाता है ।

कहना न होगा कि इन सब जिज्ञासाओं का समाधान हमारे साहित्य में कहीं न कहीं अवश्य विद्यमान है । बस आवश्यकता केवल इस बात की है कि हम इन प्राचीन ग्रन्थों का सम्यक् मनन एवं मंथन कर अपनी शंकाओं का समाधान खोज निकालें ।

महर्षि वेद व्यास कृत 'महाभारत' के "वन पर्व" के उप पर्व "आरणेय पर्व" के अन्तर्गत यक्ष एवं महाराज युधिष्ठिर के मध्य संवाद का मूल विषय इसी प्रकार की मानव जिज्ञासाओं का समाधान है । अन्त में यक्षराज, विभिन्न विषयों पर पूछे गये अपने प्रश्नों एवं जिज्ञासाओं के समाधान–युक्त पूर्ण उत्तर पाकर प्रसन्न हो चारों पाण्डवों को उनकी मूच्छार्वस्था दूर कर जीवित कर देते हैं ।

आचार्य कृष्ण कुमार मिश्र 'चंचल' ने महाभारत के इसी उपाख्यान को अपने प्रस्तुत काव्य 'धर्म–जिज्ञासा' का विषय बनाया है । कवि ने महाभारत में वर्णित यक्ष द्वारा पूछे गये 125 प्रश्नों का तो वर्णन किया ही है अपितु वर्तमानकाल के संदर्भ में लगभग 250 नवीन प्रश्नों के समाधान को भी जोड़कर काव्य को अद्यावधिक पूर्णता प्रदान कर प्रशंसनीय प्रयास किया है ।

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह वर्णन प्रधान काव्य है । ऐसे काव्यों में भाव एवं शिल्प का समावेश कदाचित कठिन ही रहता है, पर सुधी कवि 'चंचल' की सशक्त लेखनी ने यथा संभव इस कमी को भी दूर कर ही लिया है ।

पाण्डवों के वन–निवास काल में भी उनकी दैनिक चर्या पूर्ववत् ही रहती है । उनका समय व्यर्थ की बातें करने में नहीं अपितु धार्मिक कार्यों एवं धर्मशास्त्र के श्रवण में व्यतीत होता है । देखें–

"पंच महायज्ञों का पुनरपि,
विधिवत् कल्प विवेचन ।
वेद कथा कह कर वे पावन,
करते थे अघमर्षण ।।"

वनवास–काल में भी द्रोपदी गृहस्थ एवं अतिथि–धर्म का विधिवत् पालन करती हैं–

"अक्षय पात्र में द्रुपद–सुता नित,
पावन पाक बनाती ।
प्रथम अतिथि, को फिर पतियों को
खिला बाद में खाती ।।

और इतना ही नहीं मनुष्य जाति को सताने वाले दुष्टों का संहार कार्य भी हो रहा है, जो कि राज–धर्म ही है –

"उस घनघोर गहन–वन में,
किर्मीर, जटासुर मारे ।
भीमसेन ने मानव–भक्षी,
राक्षस–गण संहारे ।।"

समस्त राजसी सुविधाओं का उपभोग करने वाले राजपुत्र कुश–कट–शैय्या पर भी सुख से सो जाते हैं–

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कुसुम–कोमला शैय्या पर थी,
जिनको नींद न आती ।
आज कर्कशा, कुश–कट–शैय्या
उनके मन को भाती ।।

कव्य में पाण्डवों के वनवास के चित्रण में उनके भोजन, आवास एवं रहन सहन, आदि का वर्णन किया गया है । कहीं पर भी कोई अभाव उन्हें विचलित नहीं करता, महान पुरूषों का यही लक्षण है । वनवास–अवधि में भी अर्जुन द्वारा दिव्यास्त्रों की प्राप्ति एवं जितेन्द्रियता का गुण भारत एवं पुरूवंश की प्राचीन उच्च परंपराओं के अनुरूप है ही ।

मनुष्य की पहचान सुविधाओं में नहीं अपितु अभावों में ही होती हैं । कहीं कहीं कवि की वाणी से सार्व–कालिक सूक्तियाँ फूट पड़ी हैं –

"वन में बनते हैं चरित्र,
वन–मध्य सदैव निखरते ।"

पिता द्वारा प्रदत्त राज्य को भी विमाता कैकेयी के कहने भर से ही ठोकर मार देने वाले भगवान राम की कथा उनमें धैर्य एवं निष्ठा उत्पन्न करती है –

"सुन बढ़ता उत्साह, निराशा
भी छँट जाती सारी ।
बढ़ता धैर्य–प्रवाह, तितिक्षा–
बढ़ती उर में भारी ।।

काव्य का मूल सर्ग "धर्म वार्ता" है जिसमें यक्ष द्वारा सृष्टि एवं उसके रचयिता, विष्णु, रूद्र, और इन्द्र आदि शक्तियों के विषय में प्रश्न किये गये हैं । इसके अतिरिक्त आध्यात्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक प्रश्न भी किये गये हैं । जिनमें ईश्वर, जीव, स्वर्ग, नरक, क्रतु, शतक्रतु, शक्र, सूर्य, ब्रह्म, वेद,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शास्त्र एवं धर्म सम्बन्धी बहुत से प्रश्न हैं ।

ये प्रश्न प्राचीन भारतीय संस्कृति, साहित्य की मनीषा को तो परिभाषित करते ही हैं अपितु आज के संदर्भ में भी समस्त मानवोचित शंकाओं का समाधान करते हैं । एक एक प्रश्न एवं उसका उत्तर मानव–जीवन के लिए प्रकाश–स्तंभ हैं।

इसी क्रम में विद्या एवं अविद्या की संक्षिप्त परिभाषित देखें–

विद्या है अध्यात्म–ज्ञान जो,
निश्चय मोक्ष–प्रदाता ।
लौकिक कर्म 'अविद्या' जिससे,
मृत्यु–विजय नर पाता ।।

'जीव' की परिभाषा कितनी सहज एवं सरल है–

जन्म, मृत्यु से रहित जीव है,
शाश्वत नित्य सनातन ।
है अवध्य सर्वदा, भले ही
नश्वर होता यह तन ।।

आज हमारे समाज में धर्म के विषय में बड़ी भ्रान्ति है । इसके अर्थ को न जानने के कारण कुछ स्वार्थीजन भोली जनता को बहका कर उसमें वैमनस्य फैला कर सम्प्रदाय का गरल घोल कर लड़ा रहे हैं, जबकि धर्म की, विज्ञान–समस्त परिभाषा इस काव्य में दे दी गई है । 'धर्म' का अर्थ है– वे गुण अथवा पहचान के गुण, जिनके नष्ट हो जाने पर पदार्थ की मौलिकता ही समाप्त हो जाती है । कवि के शब्दों में–

जिसकी सत्ता से पदार्थ की,
सुस्थिर रहे इयत्ता ।
धर्म वही, जिससे निश्चित,
होवे उसकी गुणवत्ता ।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

और भी—Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जिसकी सुस्थिति से पदार्थ हो
जिसके विन मिट जाये ।
उस पदार्थ का धर्म, वही गुण–
निर्विवाद कहलाये ।।

जैसे कि जल का धर्म "शैत्य" , अग्नि का धर्म 'उष्णता' और मानवता का "सदाचार" है । शैत्य, उष्णता एवं सदाचार के अभाव में क्रमशः जल, अग्नि, एवं मनुष्य होने का कोई अर्थ नहीं है। कवि के अनुसार समाज में व्याप्त अन्याय, अभाव अज्ञान और आलस्य को समाप्त करने के लिए ही क्रमशः क्षत्रिय, वैश्य, ब्राह्मण एवं श्रमजीवी वर्गों का प्रादुर्भाव हुआ है ।

यह सार्वभौम सत्य है कि जिस समाज में उपर्युक्त चार अवगुण रहेंगे, वह समाज सदैव विघटित एवं अवनत्ति के कूप में ही पड़ा रहेगा । इस मौलिक उदभावना के लिए कवि चंचल निश्चय ही बधाई के पात्र हैं । हिन्दी साहित्य में सम्भवतः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं श्रम साधक की यह परिभाषा इससे पूर्व कहीं नहीं मिलती है । आइये देखें—

अनय, अभाव, अज्ञता, आलस,
मानव—शत्रु कहाते ।
क्षत्रिय, वैश्य, विप्र, श्रम—साधक ।
क्रमशः इन्हें भगाते ।।

इसी प्रकार सभी वर्णों को कर्मानुसार मानकर पारंपरिक रूढ़ि को तोड़ने का प्रयास किया गया है ।

इस प्रकार यदि इस काव्य को आद्योपान्त पढ़ा जाय तो इसमें पृष्ठ—पृष्ठ पर एक से एक मूल्यवान रत्न बिखरे पड़े हैं, जो हमारी भारतीय संस्कृति की समृद्धि के मूल हैं । इन्हीं विचारों के कारण हमारा राष्ट्र पूर्व काल में विश्व—गुरु रहा

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और इनसे अपरिचित रहने एवं प्राचीन ग्रन्थों को न पढ़ने के कारण हमारी नवीन पीढ़ी पाश्चात्य–प्रभाव में दिग्भ्रमित हो रही है और अपना प्राचीन नभ–चुंबी गौरव–विस्मृत कर चुकी है ।

काव्य महाभारत के उपाख्यान पर आधारित है । मूल ग्रन्थ के श्लोकों का मौलिक भावानुवाद कर कवि ने सामान्य पढ़े लिखे जिज्ञासुओं को भी जीवन–पथ के मार्गदर्शी प्रकाश–मंत्रों को सुलभ कर दिया है । इन मंत्रों के भावानुवाद में विद्वान कवि द्वारा सरलता बनाये रखने का सार्थक प्रयास किया गया है ।

महाभारत में वर्णित यक्ष के प्रश्नों के अतिरिक्त आज के संदर्भ की जिज्ञासाओं को काव्य–रूप में प्रस्तुत करना कवि का मौलिक प्रयास ही है । भाव–पक्ष सामान्य है । कवि की क्षमता निःसंदेह वरेण्य है ।

भाषा शैली

भाषा की दृष्टि से पूरा काव्य समृद्ध है । सरल, सहज एवं प्रवहमान भाषा का प्रयोग है । काव्य के पढ़ने से यह सहज ही ज्ञात हो जाता है कि शब्दों का प्रयोग आवश्यकतानुसार सामर्थ्य के साथ हुआ है । प्रश्न के काठिन्य एवं सारल्य का अनुसरण कर शब्द स्वयं काव्य धार में बहने लगते हैं । गंभीर प्रश्नों के विवेचन के अवसर पर शब्द भी यदा–कदा क्लिष्ट हो गये हैं और भाषा कुछ गुम्फित हुई है, पर यह विषयगत आवश्यकता ही है ।

काव्य में आद्यन्त प्रयुक्त छन्द 16–12–16–12 मात्राओं का है, जिसका आद्योपान्त सफल निर्वाह हुआ है । प्रवाह लगभग एक समान सहज एवं सरल रहा है । कहीं कहीं कवि की विद्वत्ता छन्द पर भारी पड़ी है, पर अधिकांशतः कवि

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने कविता के साथ पूर्ण न्याय किया है ।

अस्तु, कहा जा सकता है कि विद्वान कवि ने विषयानुसार अपनी सशक्त लेखनी से समृद्ध भाषा में सुष्ठु शैली का प्रयोग किया है ।

काव्य का वास्तविक मूल्यांकन तो पाठकों द्वारा ही होगा किन्तु आशा है कि चिन्तन एवं मननशीलों के द्वारा काव्य का यथेष्ठ स्वागत ही किया जायेगा ।

अलमतिविस्तरेण ।

दिनांक– 23–01–09

सुभाषजयन्ती

विदुषामनुचर

साहित्यश्री मुन्ने बाबू दीक्षित 'शशांक''
हिन्दी साहित्य संगम
बिलसण्डा, पीलीभीत (उ0प्र0)
कूटांक– 262202
चल दूरभाष– 9412821953
उपजिला बेसिक शिक्षा अधिकारी
शाहजहाँपुर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

।। ओन्नमः सच्चिदानन्दाय परमात्मने ।।

अथातो धर्म-जिज्ञासा ।।

द्यूत सभा में धर्मराज जब,
राजपाट सब हारे ।
कृष्णा सहित पाण्डुसुत पाँचों,
वन को सपदि सिधारे ।।1।।

करते रहे धर्म का पालन,
वन में नित्य यतन से,
ब्रह्मचर्ययुत क्षत्रिय–व्रत का,
तन–मन और वचन से ।।2।।

वन में संकट सहे अनेकों,
धर्म–पूर्ण मति–धृति से ।
रंच मात्र भी हुए न विचलित,
अपनी क्षत्रिय–कृति से ।।3।।

प्रातः काल ब्रह्म वेला में,
उठ शौचादिक करते ।
संध्या–हवन, भूत–बलि[1] देकर,
अतिथि चरण–चित धरते ।।4।।

धौम्य महर्षि शास्त्र चर्चा से,
उनका ज्ञान बढ़ाते ।
जीव–ब्रह्म की रूप–सिद्धि–
वे तर्क सहित समझाते ।।5।।

पंच महायज्ञों[2] का पुनरपि,
विधिवत् कल्प–विवेचन ।
वेद कथा कह कर वे पावन,
करते थे अघमर्षण ।।6।।

---

1. बलिवैश्वदेव यज्ञ – प्राणियों को भोजन देना ।
2. पंचमहायज्ञ– ब्रह्मयज्ञ, देव यज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ, अतिथियज्ञ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गृह्य[1]–श्रौत[2]– शुल्वादि[3] सूत्र–
ग्रन्थों का कर अधिवाचन ।
नीति – धर्म– ग्रन्थों की कहते
गुरूवर कथा पुरातन ।।7।।

सायंकाल सुनाते उनको,
पौराणिक गाथाएँ ।
और उपनिषद की आध्यात्मिक,
मनहर मंजु कथाएँ ।।8।।

सूर्यदेव ने प्रीतमना था ?
अक्षय–पात्र[4] गहाया ।
अतिथि यज्ञ में जिससे उनके,
विघ्न न कोई आया ।।9।।

अक्षय–पात्र में द्रुपद–सुता नित,
पावन – पाक बनाती ।
प्रथम अतिथि को, फिर पतियों को,
खिला बाद में खाती ।।10।।

यज्ञ–शेष अमृत भोजन से[5],
अपनी क्षुधा मिटाते ।
ईश–कृपा से कष्ट न कोई,
उनको कभी सताते ।।11।।

उस घनघोर गहन–वन में,
किर्मीर – जटासुर मारे ।
भीमसेन ने मानवभक्षी,
राक्षस–गण – संहारे ।।12।।

---

1. गृह्यसूत्र– गृहस्थ के संस्कार आदि के ग्रन्थ ।
2. श्रौत सूत्र– कर्म–काण्ड विवेचन के ग्रन्थ ।
3. शुल्व सूत्र– यज्ञशाला इत्यादि निर्माण संबन्धी ग्रन्थ ।
CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
4. जिसमें पकाया गया भोजन कभी न समाप्त होता था ।
5. यज्ञ में शेष अन्न अमृत भोजन होता है ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कुश–कंटक–मय गहन और,
उस भयाक्रान्त कानन में ।
रहते, हो निर्भीक, व्याघ्र–वृक–
सूकर भरे विजन में ।।13।।

कुसुम–कोमला शय्या पर थी,
नींद न जिनको आती ।
आज कर्कशा कुश–कट–शय्या,[1]
उनके मन को भाती ।।14।।

वन्दीजन के गीत – मधुर थे,
जिनको नित्य जगाते ।
आज श्रृगालादिक के कटुस्वर,
हैं प्रबुद्ध कर जाते ।।15।।

षट–रस–कलित–ललित नित छप्पन,
भोग लगाया करते ।
आज वही सानन्द कन्द–फल,
पाण्डव खाया करते ।।16।।

जो रेशमी दुकूल–धौत थे,
प्रतिदिन धारण करते ।
वही, स्वतन वल्कल[2]–चर्मादिक,
से आच्छादित करते ।।17।।

जिनका भृकुटि–विलास, किया–
करता जग में परिवर्तन ।
संकेतित–अंगुलि पर करती,
प्रजा सर्वदा नर्त्तन ।।18।।

---

1. कुश की चटाई का बिछौना ।
2. भोज पत्र वृक्ष की छाल ।

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वन्द्व पार्थ ने कर किरात–वपु –
धारी शिवशंकर से[1] ।
किया पाशुपत – अस्त्र[2] प्राप्त,
दुर्लभ विभु प्रलयंकर से ।।19।।

देव लोक में दिव्य – अस्त्र,
गन्धर्व–कला की दीक्षा ।
इन्द्रिय–जय की भी कर ली,
उत्तम उत्तीर्ण परीक्षा[3] ।।20।।

दुर्योधन की मुक्ति, ध्वस्त कर,
चित्रसेन की कारा ।
दंभ–द्वेष पर पाण्डव–नय का,
उचित प्रहार करारा[4] ।।21।।

जयद्रथ का द्रोपदी–हरण, थी–
घृणित – पाप – परिपाटी[5] ।
जो पैशाच–प्रवृत्ति–वृत्ति की,
निन्दनीय थी घाटी ।।22।।

किन्तु नीच पापी निश्चय, निज–
पापों का फल पाता ।
मिला जयद्रथ को भी, लौटा,
अपने अश्रु बहाता ।।23।।

काम्यक वन में बसें, द्वैतवन,
पाण्डव कभी विचरते ।
"वन में बनते हैं चरित्र,
वन–मध्य सदैव निखरते ।।24।।

---

1. किरात (भील) वेशधारी शंकर को अर्जुन ने द्वन्द्व युद्ध में प्रसन्न किया ।
2. ब्रह्मास्त्र के समान अजेय अस्त्र ।
3. गंधर्व विद्या की शिक्षा देने वाली उर्वशी को अर्जुन ने माता के समान सम्मान दिया ।
4. दुर्योधन को चित्रसेन गन्धर्व के बंधन से अर्जुन ने छुड़ाया था ।
5. द्रोपदी का अपहरण करने वाले जयद्रथ को भी पांडवों ने प्राणदान दिया ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी विज्ञ ऋषि मुनि–तापस,
उनको अवश्य मिल जाते ।
'राजा नल'[1] की कभी 'राम–
–वनवास–कथा' बतलाते ।।25।।

कृष्णा के मन की बढ़ती,
कुंठा–उद्वेग हताशा ।
'सावित्री की कथा' दूर कर–
देती दैन्य–दुराशा ।।26।।

सुन बढ़ता उत्साह, निराशा–
थी छँट जाती सारी ।
बढ़ता धैर्य–प्रवाह, तितिक्षा[2],
बढ़ती उर में भारी ।।27।।

इस प्रकार दैनन्दिन जप–तप,
यज्ञ– योग – – व्रत करते ।
बारह वर्ष व्यतीत हो चले,
वन – वन उन्हें विचरते ।।28।।

प्रातः काल हवन–संध्या कर,
सुनते रूचिर कहानी ।
अतिथि–यज्ञ, बलि वैश्वदेव की,
नियमित प्रथा निभानी ।।29।।

पर्णकुटी में एक दिवस, कर–
पूर्ण कार्य – दैनिन्दन ।
बैठे, श्रुतिगत हुआ उन्हें तब,
यों करूणामय–क्रन्दन ।।30।।

---

1. अपने भाई पुष्करं से द्यूत में पराजित होकर राजा नल ने रानी दमयन्ती सहित 12 वर्ष का भयंकर वनवास कष्ट झेला था ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

2. द्वन्द्वों को सहने क़रने की क्षमता ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरणि–पात्र[1] ले भाग गया मृग,
जा के तुरत छुड़ायें ।
यज्ञादिक व्रत भंग न मेरे ।
नृप ! कदापि हो पायें ।।31।।

पाँचों पाण्डव उठे अस्त्र ले,
मृग के पीछे धाये ।
हुआ दोपहर किन्तु न मृग को,
पकड़ दैव – वश पाये ।।32।।

था मध्याह्न प्रतप्त, सूर्य था –
अग्नि ज्वाल – बरसाता ।
सब तृषार्त्त थे, कहीं न जल का–
स्रोत उन्हें दिखलाता ।।33।।

बोले नृपति युधिष्ठिर–तरू पर–
शीघ्र नकुल चढ़ जाओ ।
सरित–सरोवर–सलिल–स्रोत का,
हे प्रिय ! पता लगाओ ।।34।।

कहा, नकुल ने तरू पर चढ़कर–
खग–समूह उड़ उड़ कर,
घुसता जाता तरु–झुरमुट में,
निश्चय वहीं सरोवर ।।35।।

जाता हूँ, जल शीघ्र तूण[2] में,
भ्राता भर कर लाऊँ ।
आप रहें निश्चिन्त यहीं पर,
आकर अभी पिलाऊँ ।।36।।

---

1. यज्ञ में अग्नि उत्पन्न करने का शमी–वृक्ष से निर्मित पात्र अरणि–पात्र कहलाता है ।

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

2. तूण – तरकस, निषंग

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गये नकुल, पर प्रचुर समय में भी,
जब लौट न पाये ।
फिर सहदेव, पार्थ, फिर नृपने,
भ्राता भीम पठाये ।।37।।

स्वयं गये साश्चर्य भूप तो,
देख दृश्य वह सारा ।
अविरल बहने लगी नयन से,
करूण–अश्रु–जल–धारा ।।38।।

भू–लुंठित, निष्प्राण नकुल–
सहदेव–पार्थ–धनुधार थे ।
वहीं भूमि पर पतित गदाधर–
भीम मृत्यु–सहचर थे ।।39।।

लगे सोचने–पहले पी लूँ–
एक घूँट भर पानी ।
फिर अपने प्रिय बन्धु जनों की,
खोजूँ करूण–कहानी ।।40।।

ज्यों ही लेकर जल–अंजलि में,
नृप ने चाह जनाई ।
त्यों ही "नहीं–नहीं" की ध्वनि –
उनके कानों में आई ।।41।।

"ठहरें नृप ! पहले दे दें,
मेरे प्रश्नों के उत्तर
तृषा बुझायें इस सर का,
फिर अमिय–तुल्य जल पीकर ।।42।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने बन्धु जनों को देखा,
मेरी बात न मानी ।
विना दिये प्रश्नों के उत्तर,
जल पीने की ठानी ।।43।।

बहुत कहा पर सबने मेरी,
चेतावनी भुलाई ।
प्राण गये पर जल की राजन!!
बूँद नहीं पी पाई "।।44।।

धर्मराज बोले अदृश्य से–
'जल फिर ही पी लूँगा ।
प्रश्न पूछिए, यथा–बुद्धि–
मैं उनके उत्तर दूँगा ।।45।।

एक एक थे यक्षराज,
प्रश्नों की झड़ी लगाते ।
नृपति युधिष्ठर सावधान हो,
समाधान बतलाते ।।46।।

चार प्रश्न समवेत रूप से,
थे यक्षेश सुनाते ।
नृप भी क्रमशः उन सबके,
उत्तर थे देते जाते ।।47।।

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्म-वार्ता

कौन सृष्टि–कर्त्ता है,
उसका नाम रूप बतलायें ?
कहाँ निवास, प्राप्ति का साधन,
राजन् बोध करायें ??1।।

सृष्टि बनाता ईश्वर,
उसका 'ओ३म्' नाम कहलाता ।
निराकार, वह घटघट वासी,
योग–गम्य, जगत्राता ।।2।।

किससे व्याप्त जगत यह किससे,
रक्षण पोषण पाता ?
कौन अन्त में इस संसृति का,
धर्मज ! प्रलय कराता ?? 3।।

व्याप्त विष्णु से जगत, उसी से–
रक्षण पोषण पाता ।
और अन्त में रुद्र रूप से,
वह ही प्रलय कराता ।।4।।

क्या है 'क्रतु' धर्मज्ञ, कौन है–
जो 'शतक्रतु' कहलाता ?
कौन 'शक्र' है और 'इन्द्र'
किसको बतलाया जाता ??5।।

'क्रतु' है यज्ञ, 'शतक्रतु' जो–
पावन शत यज्ञ रचाये ।
वही जीव है शक्र[1],
वेद में वहीं इन्द्र[2] कहलाये ।।6।।

---

1. शतक्रतु का संक्षिप्त रूप शक्र (शत–श, क्रतु–क्र)
2. इन्द्र– इन्द्रियों का स्वामी (अहं इन्द्रो न पराजिग्ये)

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो ऐश्वर्यवान है निर्भय,
जो है मृत्यु विजेता ।
इन्द्रिय स्वामी, जीव इन्द्र है,
सत्य, सुधी, नचिकेता ।।7।।

कौन सूर्य को करे उदित ?
फिर कौन साथ हैं चलते ?
कौन अस्त करता है उनको ?
वास कहाँ वे करते ??8।।

'ब्रह्म' उगाता सूर्य देव को,
'देव' साथ हैं चलते ।
'धर्म' अस्त करता है उनको,
वास 'सत्य' में करते ।।9।।

कैसे श्रोत्रिय बने, उच्चपद–
मानव कैसे पाता ?
कैसे साथी मिलें, किस तरह –
बुद्धिमान बन जाता ??10।।

वेद–पाठ' से श्रोत्रिय बनता,
'तप' है उच्च बनाता ।
'धैर्य' दिलाता साथी,
'सेवा' से प्रबुद्ध बन जाता ।।11।।

वेद' किसे कहते हैं, कितने,
होते हमें बताओ ?
कौन–कौन उपवेद, नाम,
उन सबके हमें गिनाओ ??12।।

---

1. वेद– 'विद् ज्ञाने' धातु से वेद शब्द बनता है जिसका अर्थ है ज्ञान ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'वेद' "ज्ञान" को है कहते,
हैं चार गये बतलाये ।
जो ऋगवेद–साम–यजु, चौथा–
पुनि अथर्व कहलाये ।।13।।

हैं उपवेदचार, ऋक् का
यह अर्थवेद कहलाता,
यजुर्वेद का 'धनुर्वेद' ,
'गन्धर्व' साम है गाता ।।14।।

आयुर्वेद अथर्व वेद का,
है उपवेद कहाये ।
चार वेद के यही चार–
जाते उपवेद गिनाये ।।15।।

अंग वेद के हैं कितने ?
उन सबके नाम गिनायें ?
कितने शास्त्र, नाम भी उनके–
अलग–अलग बतलायें ??16।।

होते हैं षट्–अंग वेद के,
ऋषियों की रचनाएँ ।
शिक्षा, कल्प, निरूक्त, व्याकरण–
ज्योतिष, छन्द कहायें ।।17।।

हैं षट्–शास्त्र प्रसिद्ध,
न्याय– दर्शन– गौतम की रचना ।
'योगशास्त्र' पातंजलि मुनि का,
'सांख्य' कपिल सरचना ।।18।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'वैशेषिक' कणादका, जैमिनि–
का 'मीमांसा दर्शन' ।
'ब्रह्मसूत्र–वेदान्त' व्यास ऋषिवर
का दिव्य निदर्शन ।।19।।

किसे उपनिषद् कहते ?
उनकी कुल संख्या बतलायें ?
और प्रमुख उपनिषदों के भी,
राजन् ! नाम गिनायें ??20।।

'ब्रह्म–जीव' का ज्ञान जहाँ, गुरु–
शिष्यों को समझाते ।
'एकादश उपनिषद' प्रमुख हैं
वही बताये जाते ।।21।।

'ईश–केन–कठ–प्रश्न' और–
'मुण्डक माण्डूक्य' बताते ।
'ऐतरेय' पुनि 'तैत्तिरीय',
नवमा 'छान्दोग्य' गिनाते ।।22।।

'बृहदारण्यक' दशम उपनिषद,
ज्ञान–सुधा का सागर ।
है 'श्वेताश्वतरीय उपनिषद'–
एकादश श्रेयस्कर ।।23।।

विद्या कहते किसे, अविद्या–
तथा किसे बतलाते ?
विद्या और अविद्या का क्या–
लक्ष्य वेद समझाते ??24।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्या है अध्यात्म–ज्ञान, जो–
निश्चय मोक्ष – प्रदाता,
लौकिक कर्म अविद्या जिससे,
मृत्यु–विजय नर पाता ।।25।।

सत्य–धर्म–घट के मुख को,
बोलो किसने ढक डाला ?
कैसे प्राप्त करें हम नृपवर !
यह सत्यामृत–प्याला ??26।।

स्वर्ण–तुल्य–भासित असत्य–
पट ने सत् को ढक डाला ।
सत्य धर्म का दर्शन पाते,
खोल असत् का ताला ।।27।।

कितने पथ हैं जिन पर मानव,
मृत्यु लोक में चलता ?
उनसे पृथक–पृथक बतलाओ,
लाभ हमें क्या मिलता ??28।।

प्रेय, श्रेय दो पंथ, प्रेय है,
लौकिक सुख–संधाता ।
श्रेय मार्ग, अध्यात्म–सरणि है,
निश्चय मुक्ति–प्रदाता ।।29।।

जन्म मृत्यु से रहित कौन है,
शाश्वत्, नित्य, पुरातन ?
कौन अवध्य सर्वदा, राजन् !
नश्वर है यद्यपि तन ??30।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन्म–मृत्यु से रहित जीव है,
शाश्वत, नित्य, सनातन ।
है अवध्य सर्वदा, भले ही–
नश्वर होता यह तन ।।31।।

रथ क्या, कौन रथी, उस रथ के–
कौन अश्व कहलाते ?
कौन लगाम थाम यन्ता को,
श्रेय लक्ष्य पहुँचाते ??32।।

जीवं रथी, तन ही रथ, यह–
इन्द्रिय–गण अश्व कहाये ।
बुद्धि सारथी, मन लगाम को,
थाम लक्ष्य पर जाये ।।33।।

कौन नगर है जिसमें होते,
आठ चक्र नवद्वारे ?
कनकासन पर बैठ कौन यह,
सृष्टि–सूत्र संचारे ??34।।

यह तन अवधनगर है जिसमें,
आठ चक्र नव द्वारे ।
जिसके हृदय–हिरण्य देश में,
बैठा विभु वपु धारे ।।35।।

ब्राह्मण का देवत्व कहाँ ?
सज्जनता–धर्म कहाँ है ?
क्या है मानव भाव और,
दुर्जन आचरण कहाँ है ??36।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'वेद–पाठ' देवत्व विप्र का,
'तप' उसकी सज्जनता ।
मानव–भाव ''मृत्यु'' है,
परनिन्दा उसकी दुर्जनता ।।37।।

क्षत्रिय का देवत्व कहें,
क्या उसका सदाचरण है ?
मानव–भाव कौन उसका,
क्या उसमें दुराचरण है ??38??

'शस्त्र – ज्ञान' देवत्व,
'यज्ञ–करना' उसकी सज्जनता ।
'भय' मानवी स्वभाव,
'दीन–जन–परित्याग' दुर्जनता ।।39।।

मृतक तुल्य है कौन जगत में,
व्यर्थ सकल जीवन है ?
जिसे नृपति निज गृह–निवास से,
बढ़कर निर्जन वन है ??40।।

दुष्ट नारि, शठ मित्र, धूर्त–कपटी,
जिसका चाकर है ।
सर्पवास गृह में जिसके,
निश्चय मृतवत् वह नर है ।।41।।

तजे कौन सा देश नृवर !
जा कहाँ निभृत बस जाये ?
कौन मनुज जग में है सच्चा,
वांधव जो कहलाये ??42।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहाँ न हो व्यापार,
दंड–भय, नैतिकता, सच्चाई ।
भयाक्रान्त जो देश त्याग दो,
यदि चाहते भलाई ।।43।।

धनिक, नृपति–धर्मज्ञ, वैद्य, वुध,
जिस सुदेश में रहते ।
सरित सदा–नीरा उस थल को,
वास योग्य कवि कहते ।।44।।

संकटकाल, अकाल, रोग में,
राजद्वार तक जाये ।
शव यात्रा में संग चले;
सच्चा वांधव कहलाये ।।45।।

कौन अविश्वसनीय जगत में,
श्रद्धा–पात्र बतायें ?
नारि वर्ग में कौन–कौन गुण;
हैं नृप शीघ्र गिनायें ??46।।

शस्त्र–हस्त–नर और श्रृंग–नख–
दन्त–युक्त वपु–धारी ।
सजग रहें कुनदी, नृप कुल से,
दूर तजें पर नारी ।।47।।

मात–पिता, गुरु, सन्त, स्वजन पर,
निज विश्वास बनायें ।
श्रद्धाभाव न तजें कभी भी,
भले प्राण ही जायें ।।48।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षमा, दया, ममता, वत्सलता,
करूणा, त्याग, तितिक्षा ।
प्रजनन, पालन, धैर्य, दमन हैं,
नारी स्वगुण विवक्षा ।।49।।

किसे यज्ञ कहते हैं राजन,
अमृत क्या कहलाता ?
और 'विघस' भोजन क्या जिसको,
उत्तम शास्त्र बताता ??50।।

श्रेष्ठ–कर्म ही यज्ञ, 'अमृत' है
यज्ञ–शेष कहलाता ।
अतिथि–सन्त का भुक्त–शेष ही,
'विघस' – अशन बन जाता ।।51।।

कौन यज्ञ का 'साम', यज्ञ का –
यजुष् कौन कहलाता ?
कौन यज्ञ का वरण; न जिसका,
अतिक्रमण कर पाता ??52।।

'प्राण' यज्ञ का साम, यज्ञ का–
यजु है 'मन' कहलाता ।
'ऋचा' यज्ञ का वरण न जिसका –
भेद यज्ञ कर पाता ।।53।।

क्या है प्राण कृषक का, प्रिय–
क्या है बोने वालों का ?
धनवानों का श्रेय ; ध्येय–
क्या होता घरवालों का ??54।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'वर्षा' प्राण कृषक का, प्रियतम–
'बीज' वपन कर्त्ता को ।
धनवानों का श्रेय 'धेनु' है,
'पुत्र' वंशकर्त्ता' को ।।55।।

कौन पुत्र है और जगत में,
कौन यहाँ सन्नारी ?
मित्र कौन है और शत्रु है;
कौन महा दुखकारी ??56।।

पितृ–भक्त है पुत्र,
पतिव्रत–धर्म–परायण नारी ।
दुख में साथी मित्र,
अकारण द्वेष–करे रिपु भारी ।।57।।

कौन मित्र है जिसका राजन्,
त्याग महा सुख कारी ?
शत्रु कौन हे जिसका चिन्तन,
है जग में दुखहारी ??58।।

प्रिय बोले सम्मुख, पर पीछे,
हानि सदा पहुँचाये ।।
ऐसे कपट मित्र को तजकर;
मनुज सदा सुख पाये ।।59।।

ज्ञानी, सच्चरित्र, अक्रोधी,
धर्मनिष्ठ जो सन्नर ।
यद्यपि शत्रु, किन्तु वह फिर भी,
निश्चय ही है हितकर ।।60।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसको सुधा मृत्युकारक;
विष करता किसे अमर है ?
किसको निशा नृपति ! दुखदायक;
किसको अति सुखकर है ??61।।

सुधा राहु को मृत्यु, शंभु को,
करता गरल अमर है ।
कोक शोक–प्रद निशा, चोर को,
अतिशय ही सुखकर है ।।62।।

बुद्धिमान–सम्मानित–मानित,
भोग–लीन जो जन है ।
प्राण–युक्त तन उनके, फिर क्यों–
प्राण–हीन जीवन है ??63।।

'देव–अतिथि–परिजन–बृद्धों का,
और न अपना पालन ।
कर पाते जो, उन्हीं नरों का,
प्राण–हीन है जीवन ।।64।।

कौन उच्च आकाश लोक से ?
कौन भूमि से भारी ?
अधिक तृणों से कौन ?
वायु से कौन शीघ्र संचारी ??65।।

'पिता' उच्च आकाश लोक से,
'मातु' भूमि से भारी ।
'चिन्ता' तृण से अधिक; वायु से–
मन सत्त्वर–संचारी ।।66।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौन दोष है जिनसे मानव,
विना अग्नि जलता है ?
ऐसी कौन परिस्थिति जिसमें,
नाश नहीं रूकता है ??67।।

नारि–वियोग, दुष्ट–नृप–सेवा,
उऋण न यदि हो पाता ।
स्वजन–अनादर, पतित–वृत्ति से,
अग्नि विना जल जाता ।।68।।

जार–नारि, तट–वृक्ष, निरूद्यम,
विनशें दैव सहारे ।
मंत्र–हीन नृप–राज्य नष्ट हों,
मूरख विप्र विचारे ।।69।।

कार्यपूर्ति के बाद कौन,
तज देते निज आश्रय को ?
और कौन जो नृवर ! नहीं,
त्यागते कभी प्रश्रय को ??70।।

फल–विहीन तरु को खग तजते,
जार–नारि निर्धन को ।
जग को हैं मुमुक्षु जन तजते,
मृग जलते कानन को ।।71।।

पातिव्रत सुव्रता, न त्यागे;
आश्रय तरु को छाया ।
व्रती वचन को, सखा सुहृद को,
विधि–प्रपंच को माया ।।72।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुत को करे नियोजित किससे,
कहाँ सुता को जोड़े ?
मित्र कहाँ पर और शत्रु को,
नृपति कहाँ पर छोड़े ??73।।

विद्या से सुत करे नियोजित,
सुता सुकुल से जोड़े ।
मित्र धर्म से और शत्रु को,
व्यसन–व्यूह में छोड़े ।।74।।

क्या सुपुत्र से लाभ, हानि है,
क्या कुपुत्र से होती ?
किसके घर में लक्ष्मी आकर,
निभृत होकर सोती ??75।।

पुष्पित तरु की ज्यों सुगंध से,
महक उठे वन सारा ।
त्यों सुपुत्र के गुण–गौरव से;
चमक उठे कुल सारा ।।76।।

अग्नि– प्रज्वलित सूखे तरु से,
सारा वन जल जाता ।
त्यों कपूत के निन्द्य कर्म से,
वंश नष्ट हो जाता ।।77।।

धर्म–कर्म–संयुत जिस घर में,
गुण की पूजा होती ।
दम्पति–प्रेम जहाँ, निभृत हो,
लक्ष्मी सुख से सोती ।।78।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खग–मृग में चाण्डाल, कौन–
अति चंड–प्रकृति का नर है ?
कौन महा चांडाल बताओ,
इस समग्र भूपर है ??79।।

वायस चांडाल खग–कुल में,
पशुओं में कूकुर हैं ।
निन्दक नर चांडाल,
महाचांडाल बधिक निशिचर है ।।80।।

कौन दिवान्ध, रात्रि में अपनी;
दृष्टि कौन है खोता ?
कौन जिसे दिनरात कभी भी,
कुछ न दृष्टिगत होता ??81।।

है दिवसान्ध उलूक, रात्रि में,
काक दृष्टि निज खोता ।
पर कामान्ध न जिसे रात दिन,
किमपि दृष्टिगत होता ।।82।।

किन बातों को कभी चतुर नर,
घर की कहीं बतावे ?
और किसे सामोद समय पर,
नर समाज में गावे ??83।।

अर्थनाश, निज मनस्ताप को,
घर की गुप्त कहानी ।
निज वंचन, अपमान प्रकाशित,
करें न जो नर मानी ।।84।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधी सन्त–संगम हो, गृह में,
यज्ञादिक संयोजन ।
पुत्र जन्म का करें प्रकाशित,
पुनि विजयादि प्रयोजन ।।85।।

नेत्र खुलें निद्रा में, किसका–
चेष्टा–हीन जनन हैं ?
हृदय–हीन है कौन ?
वेग से बढ़े कौन प्रतिक्षण है ??86।।

नयन 'मीन' के खुलें शयन में,
'अंड' न चेष्टा करता ।
हृदय–हीन 'पाषाण' ; नदी का–
वेग प्रतिक्षण बढ़ता ।।87।।

है प्रवास में मित्र कौन ?
है घर में कौन हितैषी ?
कौन मित्र रोगी का है ?
मुमूर्षु का कौन शिवैषी ??88।।

"सहयात्री" प्रवास में; घर में–
'पत्नी' सदा हितैषी ।
"वैद्य" मित्र रोगी का; होता–
"दान" मुमूर्षु[1] शिवैषी[2] ।।89।।

कौन अतिथि है प्राणि मात्र का ?
क्या है धर्म–सनातन ?
क्या है अमृत और जग का क्या ।
जीवन कहिए राजन् ।।90।।

---

1. मुमूर्षु– मरणासन्न व्यक्ति ।
2. शिवैषी– कल्याण चाहने वाला ।।

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राणि–मात्र का अतिथि 'अग्नि' है,
'वैदिक–धर्म' सनातन ।
अमृत है 'गो–दुग्ध', पवन है –
सारे जग का जीवन ।।91।।

यदि दरिद्र–गृह में आ जावे,
अकस्मात् अभ्यागत ।
तो वह किस–विधि रंक बताओ –
करे अतिथि का स्वागत ।।92।।

मृदु वाणी, शीतल जल, भूपर–
बिछा हुआ कुश–आसन ।
सरल–विनय, शुचिता– सुशील से,
करे अतिथि– अभ्यर्चन ।।93।।

उत्तम नर की क्या होती,
क्या मध्यम–जन अभिलाषा ।
अधम जनों के मन में राजन्,
क्या वसती प्रत्याशा ।।94।।

उत्तम चाहे मान, मान–धन,
मध्यम की अभिलाषा ।
अधम जनों को येन केन विधि,
केवल धन की आशा ।।95।।

दन्त–केश–नख–नेत्र–श्रवण सब,
अंग जीर्ण हो जाते ।
किन्तु कौन वह जिसको हम,
तारुण्य–वृद्धि–रत पाते ।।96।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दन्त केश नख नेत्र श्रोत्र सब,
जरा जीर्ण हो जाते ।
तृष्णा को हम नित्य किन्तु,
तारूण्य–बृद्धि–रत पाते ।।97।।
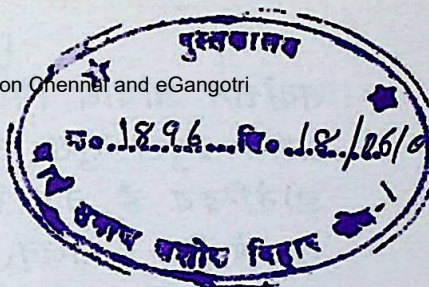
सबसे बड़ा कौन विष जग में,
सबसे कौन दुखारी ?
कौन पूज्यतम जग में राजन् !
धन्य कौन नर नारी ??98।।

विषयासक्ति महाविष,
होता विषयी परम दुखारी ।
भक्त पूज्यतम, और,
धन्यतम जग में पर उपकारी ।।99।।

किससे तन की शुद्धि,
और मन किससे पावन होता ?
बुद्धि शुद्धि कैसे,आत्मा का,
मल कैसे नर धोता ??100।।

जल से तन की शुद्धि,
सत्य से मानस पावन होता ।
बुद्धि ज्ञान से, जीवात्मा का
तप से मल नर धोता ।।101।।

कौन प्रधान जगत में औषधि,
क्या उत्तम सुख–साधन ?
सर्वोत्तम इन्द्रिय क्या, तन में,
अंग श्रेष्ठतम राजन् ??102।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वोत्तम औषधि गिलोय है,
अशन प्रमुख सुख साधन ।
ज्ञानेन्द्रिय है नेत्र श्रेष्ठतम,
तन में शिर है राजन् ।।103।।

कौन चले एकाकी ? प्रतिदिन–
किसका नया जनन है ?
शीतोषधि है कौन ? कौन–
करता सबका प्रजनन है ??104।।

'रवि' एकाकी चले, 'सोम' का–
प्रतिदिन नया जनन है ।
'अग्नि' शीत की औषधि;
'भू' करती सबका प्रजनन है ।।105।।

सबसे बड़ा कौन धन जग में,
होता नृपति बतायें ?
जिसे प्राप्त कर प्राप्तव्य–
कुछ भी न यहाँ बच पायें ??106।।

'गो–धन', 'गंज–धन' –वाजि, रत्न धन,
रत्न–चतुर्दश1 सारे ।
धूलि–सरिस, "संतोष–कोष" यदि,
होवे पास हमारे ।।107।।

गुण समूह में एक दोष है;
किस प्रकार छिप जाता ?
एक दोष भी गुण समूह का
कैसे नाश कराता ??108।।

चौदह रत्न– 1– लक्ष्मी सुरा कौस्तुभ शार्ङ्गशङ्खा:,
उच्चैःश्रवा कामदुघाथ रम्भा ।
ऐरावतः कल्पतरुर्मृगाङ्को
धन्वन्तरिश्चापिविषं सुधा च ।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शशि के शैत्यादिक गुण–वैभव–
में कलंक छिप जाता ।
निर्धनता के घोर–तमस से,
गुण–समूह नश जाता ।।109।।

धर्म [1] किसे कहते हैं, उसका–
लक्षण प्रकट बतायें ?
धर्म अनेक एक या; उसके–
भिन्न रूप बतलायें ??110।।

'जिसकी सत्ता से पदार्थ की–
सुस्थिर रहे इयत्ता ।
धर्म वही जिसमें निष्ठित,
होवे उसकी गुणवत्ता ।।111।।

जिसकी सुस्थिति से पदार्थ हो,
जिसके विन मिट जाये ।
उस पदार्थ का 'धर्म' वही गुण–
निर्विवाद कहलाये ।।112।।

जल का धर्म 'शैत्य'; पावक का–
है 'उष्णत्व' कहाता ।
सदाचरण–मानवता 'मानव–धर्म'–
वेद बतलाता ।।113।।

मिलता लौकिक–शान्ति सौरव्य,
जिससे सर्वत्र विजय है ।
धर्म करे कल्याण–अलौकिक,
पाप ताप का क्षय है [2] ।114।।

---

1. धर्म– "धारणात् धर्ममित्याहुः धर्मो धारयते प्रजाः ।"
2. यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिस्सः धर्मः। (वैशेषिक दर्शन)

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो कुपंथ से हटा मनुज को,
सुपथ सदा दिखलाता ।
धर्म वही जो निज आश्रित को,
उच्चादर्श सिखाता ।।115।।

धर्म–हेतु यदि मानव कोई,
तन–मन से जुट जाये ।
आगे बढ़कर स्वयं धर्म भी,
उसको विजय दिलाये[1] ।।116।।

रक्षा करे धर्म की जो जन,
करके व्रत–परिपालन ।
करे धर्म भी सदा पुत्रवत्,
ऐसे नर का लालन[2] ।।117।।

आर्यजनों का रहा सद 'व्रत'–
"प्राण भले ही जावे ।
किन्तु कभी भी उनका प्रियतम–
धर्म न जाने पावे" ।।118।।

'श्रेष्ठ–कर्म' ही धर्म; धर्म–
लौकिक–परलोक विजय है ।
'विश्व–धर्म भी यही–
'पुण्य–संचय, पापोंका क्षय है ।।119।।

धैर्य–क्षमा–शम–दमास्तेय पुनि,
शौच–त्रय–परिपालन ।
विद्या–बुद्धि–अरोष–सत्य,
दशरूप–धर्म के पावन ।।120।।

---

1. यतो धर्मस्ततोजयः । (गीता)
2. धर्मो रक्षति रक्षितः । (महाभारत)

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

लौकिक धर्म, पार लौकिक भी,
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तथा व्यक्तिगत मानें ।
सामाजिक, राष्ट्रीय, वैश्विक,
भेद धर्म के जानें ।।121।।

सार्वभौम है धर्म एक ही
मानव – धर्म वही है ।
आर्य–धर्म [1] ही, विश्व–धर्म है ,
शाश्वत धर्म यही है ।।122।।

कौन धर्म का प्रतिपादक है ?
दाता कौन सुयश का ?
सुस्थित कहाँ स्वर्ग है, बोलो ?
प्रमुख–स्रोत क्या सुख का ??123।।

है "दक्षता" धर्म–प्रतिपादक,
"दान" सुयश का दाता।
वसे "सत्य" में स्वर्ग, "शील" है –
सुख का सदा प्रदाता ।।124।।

किसको कहते' स्वर्ग', 'नरक'–
किसको हैं राजन! कहते ?
हैं ये कहाँ और इनमें हैं,
कहो ! कौन जन रहते ??125।।

"सुख–वैभव" है स्वर्ग,
"पाप–दुःख" नरक–लोक कहलाता ।
यक्षराज ! इनका दर्शन है –
हमें यहीं मिल जाता ।।126।।

---

1. आर्य धर्म – श्रेष्ठ पुरुषों का धर्म, जो "सर्वेभवन्तु सुखिनः, सर्वेसन्तु निरामया" (सभी सुखी और सभी नीरोग हों) के सिद्धान्त का पालन करना सिखाता है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्त–सदाचारी – योगी,
कर्मठ, सुपंथ के राही ।
धर्म–निष्ठ मानव के घर में,
रहता स्वर्ग सदा ही ।। 127

कलह–व्यसन–निन्दा–हिंसा में,
अनय–पाप में रत है ।
ऐसे अधम अधर्मी नर के
घर में नरक सतत है ।। 128

जीव किसे कहतें हैं राजन ?
लक्षण सहित बतायें ?
अन्य कौन, पर्याय नाम–
शास्त्रीय हमें गिनवायें ??129।।

इच्छा–द्वेष–हर्ष–सुख–दुख–मय,
क्षुधा–तृषा–भय–धारी ।
जीव प्रयत्न–ज्ञान–कृति–संयुत
जीवन–मृत्यु–बिहारी ।।130।।

जीव, हंस, देही, जीवात्मा,
पुरूष, रथी, कहलाता ।
आत्मा, इन्द्र, रूद्र, क्रतु कह कर,
इसको वेद बुलाता ।।131।।

क्या मनुष्य का प्राण, कौन है –
दैवी सखा –सृजन का
जगती का आधार कौन ?
क्या परमाश्रय जीवन का ??132।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

‘पुत्र’ प्राप्य होता मनुष्य का,
‘पत्नी’ सखा सृजन में ।
जगती काआधार “मेघ”
आश्रय “सु–दान” जीवन में ।।133।।

धन्य जनों का गुण क्या होता ?
सर्वोत्तम धन क्या है ?
किसे लाभ सर्वोपरि कहते ?
सर्वोत्तम सुख क्या है ??134।।

है “दक्षता” धन्य–जन का गुण,
“शास्त्र” सदा धन– उत्तम ।
सर्वोपरि आरोग्य–लाभ”
“सन्तोष” मोद सर्वोत्तम ।।135।।

सवसे दुर्लभ ‘योनि’ कौन सी ?
सबसे सुख क्या भारी ?
सबसे बड़ा कौन इस जग में,
कहो नृपति ! दुखकारी ??136।।

“मानव–तन” दुर्लभ–तम जग में,
“सन्त–मिलन” सुख भारी ।
जग में दुःख असंख्य पर सबसे,
निर्धनता दुखकारी ।।137।।

‘सन्त” किसे कहतें हैं नृपवर ! ?
कौन असन्त कहायें ?
दोनों के नृप ! पृथक–पृथक कर,
लक्षण शीघ्र वतायें ??138।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सन्त' सतत् पर हित–साधन में,
तन–मन–समय लगाते ।
पर–दुख लख नवनीत सदृश वे,
द्रवित त्वरित हो जाते ।।139।।

हैं असन्त 'सन' सरिस सदा,
पर–बंधन–हित दुख सहते ।
औरों को दुख मिले, यही वे
चिन्तन करते रहते ।।।140।।

'परम–धर्म किसको कहते ?
क्या 'नित्य–धर्म' कहलाता ?
किसके यम से शोक न हो ?
किसका न स्नेह घट पाता ??141।।

परम–धर्म है "दया", नित्य है–
"मानव –धर्म" कहाता ।
"मन–संयम" से शोक न,
सज्जन का न स्नेह घट पाता ।।142।।

किसे त्याग कर प्रिय बनता ?
तज किसे नहीं पछताता ?
किसका त्याग सफल है ?
किसको त्याग सदा सुख–पाता ??143।।

"मान" त्याग कर प्रिय बनता,
तज "क्रोध" नहीं पछताता ।
सफल बने तज "काम–वासना",
लोभ, त्याग सुख पाता ।।144।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्राह्मण अथवा, कला निपुण को,
दान दिया जाता क्यों ?
'सेवक' तथा 'नृपति' को–
अर्थ–प्रदान किया जाता क्यों।।145।।

''धर्म–हेतु'' है विप्र–दान,
है कला दान यश पाने ।
''भरण–हेतु'' सेवक को,
नृप को दें "स्वराष्ट्र–विकसाने" ।।146।।

सबसे बड़ा ''पुण्य'' क्या, सबसे–
बड़ा ''पाप'' बतलायें ?
"परम–धर्म" जग में क्या राजन ।
''महा–अधर्म'' बतायें ??147।।

पुण्य ''अहिंसा'' सबसे बढ़कर,
''हिंसा'' पाप कहाती ।
"परहित" परम–धर्म, पर "पीड़ा"–
है अधर्म कहलाती ।।148।।

मानस–रोग बड़े ही घातक,
जगती में कहलायें ।
प्रमुख रूप से राजन! उनके,
नाम हमें बतलायें ।।149।।

काम–क्रोध–मद–मोह–लोभ–
मत्सर–पैशुन्य बताते ।
दंभ–कपट–परबंचन–निन्दा,
मानस–रोग कहाते ।।150।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किससे जग–प्रच्छन्न ?
प्रकाशित क्यों न सद्य हो पाता ?
कौन कराता मित्र–त्याग ?
है स्वर्ग कौन छुड़वाता ??151।।

जग अज्ञानाच्छन्न,
न 'तम' से द्योतित होने पाता ।
"लोभ कराता त्याग मित्र का ,
"मोह" स्वर्ग छुड़वाता ।।152।।

कैसे मृत हो पुरूष', राष्ट्र' मृत–
किस प्रकार कहलाता ?
कैसे मृत हो 'धर्म' 'यज्ञ' भी
कैसे मृत बन जाता ??153।।

'गुण–विहीन' नर मृतक,नृपति–विन
'राष्ट्र मृतक हो जाता ।
'श्रद्धा–विन' मृत घर्म, दक्षिणा–
हीन यज्ञ मर जाता ।।154।।

कौन "सुपथ" बतलाता है ?
'जल वर्षण' कौन कराता ?
अन्न कौन, विष क्या, सुश्राद्ध का–
काल कौन बतलाता ??155।।

"सन्त" सुपथ बतलाता,
"घन" से होता सदा जलागम ।
"भूमि" अन्न, याचना" विषम–विष,
श्राद्धकाल "विप्रागम"[1] ।।156।।

1– चरित्रवान ब्राह्मण के अकस्मात आगमन काल को ही अतिथि सेवा (श्राद्ध) का उचित अवसर मानना चाहिए ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तप का क्या लक्षण है नृपवर !
दमन किसे हैं कहते ?
क्या है उत्तम क्षमा ? किसे–
लज्जा हैं धर्मज ! कहते ??157।।

तप स्वधर्म में निरति निरन्तर
'मन का शमन' दमन है ।
उत्तम क्षमा 'द्वन्द्व का सहना'
लज्जा 'त्याज्य–त्यजन' है ।।158।।

'ज्ञान' किसे कहते हैं राजन ?
क्या है 'शम' कहलाता ?
क्या है "दयाभाव" नृपवर ! नर
आर्जव कब दिखलाता ??159।।

"परम–तत्व का बोध" ज्ञान है,
'शम' उर की शीतलता" ।
"परसुख–चिन्तन" दया–भाव,
आर्जव "चित की कोमलता" ।।160।।

कौन मूर्ख का शत्रु, चोर
किस अरिको लख व्याकुल है ?
कौन कृपण का, जार नारि का,
सबसे शत्रु प्रबल है ??161।।

शिक्षक शत्रु मूढ़ का ,शशि को
लखकर चोर विकल है ।
याचक शत्रु कृपण का,पति ही
जार–शत्रु प्रतिपल है ।।162।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसे त्याग करके गृहलक्ष्मी,
सपदि चली जाती है ?
निर्धन जन से प्रीति न किसकी,
राजन निभ पाती है ??163।।

वसन–दशन मल युक्त, अशन बहु–
भोजी, कटु भाषी को ।
परित्याग दे लक्ष्मी,
संध्या–शायी, अघराशी को ।।164।।

दारा, स्वजन, सुह्रद जग के सब,
प्रियतम मित्र चहेते ।
धन विहीन नर का हैं नभचर ।
सपदि त्याग कर देते ।।165।।

'दुर्जय–शत्रु" कौन है ? किसको–
"व्याधि–अनन्त" बताते ?
कौन "साधुं" है, और कौन से–
नर "असाधु" कहलाते??166।।

दुर्जय–रिपु है क्रोध", लोभ को–
व्याधि अनन्त बताते ।
"सर्व–हितैषी" साधु, "निर्दयी"–
हैं असाधु कहलाते ।।167।।

"मोह" किसे कहते हैं राजन !
"मान" किसे हैं कहते ?
किसे कहें "आलस्य", "शोक क्या–
जिसे अबुधजन सहते ??168।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''धर्म–मूढ़ता'' मोह, मान–
''आत्माभिमान'' कहलाता।
आलस ''धर्मप्रमाद''
देव! "अज्ञान" शोक बन जाता ।।169।।

कौन 'अज्ञ' नर और कौन है –
'विज्ञ' यहाँ कहलाता ?
"तज्ञ" नृवर ! है कौन, किसे –
'सर्वज्ञ' बताया जाता ??170।।

अनाहूत जा सभा मध्य जो,
बोले बिना बुलाये ।
निन्दक, मूढ़, अविश्वासी नर ,
निश्चय 'अज्ञ' कहाये ।।171।।

आस्तिक, सदाचार–रत, तोषी,
मद–मोहादि–विरत है ।
"विज्ञ" सुधी, व्युत्पन्न–बुद्धि–युत,
शम–दम कर्म–निरत है ।।172।।

योग–निष्ठ, वेदज्ञ, ब्रह्मविद,
''तज्ञ'' सतत् कहलाता ।
है ''सर्वज्ञ'' सर्व–व्यापक,
सच्चिदानन्द जग–त्राता ।।173।।

राजन ! क्या "सुस्थैर्य", 'धैर्य" –
किसको नृपवर ! बतलाते ?
क्या है ''परमस्नान'', "दान" –
सर्वोत्तम किसको गाते ??174।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुस्थिरता "दृढ़ता"–स्वधर्म में "
धैर्य सदा "इन्द्रिय–जय" ।।
"त्याग मनोमल का" सुस्नान है,
दान "प्राणि–रक्षा मय ।।175।।

"पंडित" कौन, और है जग में –
"नास्तिक" कौन कहाता ?
"मूर्ख" कौन होंता है बोलो !
"मत्सर क्या कहलाता ??176।।

पंडित है "धर्मज्ञ", वेद–निन्दक –
नास्तिक[1] कहलाता ।
है "अबोध" ही मूर्ख सदा–
मत्सर[2] "कलंक लगवाता" ।।177।।

'अहंकार" क्या ? और दंभ हैं –
किसे प्राज्ञ–जन कहते ?
"परम–देव" है कौन ? "पिशुनता"
क्या जिसमें नर दहते ??178।।

अहंकार"अज्ञान", दम्भ है –
जग में "छदम–प्रदर्शन" ।
परम–देव है "दान", पिशुनता–
है "पर दोष–प्रकाशन " ।।179।।

'ऋषि[3]–'मुनि[4] कहते किन्हें ? किन्हे–
हैं "साधु'[5]–"सन्त'[6] बतलाते ?
किसे "महात्मा'[7] कहकर राजन !
सुधी प्रणत हो जाते ??180।।

1– नास्तिक– "नास्तिको वेद–निन्दकः "
2– मत्सर "मत्सर काहि कलंक न लावा" ।
3– ऋषि– ऋषयो मन्त्र–हष्टारः' । 4– मुनि– 'मननात् मुनिः । 5– साधु [illegible] चरित्रता:" 6– सन्त "गुण–संग्राहिणो सन्तः" । 7– महात्मा– महाँश्चासौ आत्मा"इति

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''वेद–मन्त्र–द्रष्टा– ज्ञानी –
वेदज्ञ'' ऋषी कहलाते ।
"मनन शील ज्ञानी" मुनि की–
संज्ञा से जाने जाते ।।181।।

सरल–चरित्र–व्रती जन ही तो–
साधु–जगत हितकारी ।
सदगुण गहें सन्त, पय जैसे –
हंस गहें तज वारी ।।182।।

जप–तप–व्रत–अष्टांग–योग से–
आत्मा–उच्च बनाते ।''
वहीं महात्मा पद से जग में,
प्राज्ञ ख्यात हो जाते ।।183।।

धर्म–अर्थ–कामादिं परस्पर –
रहते नित्य विरोधी ।
बन जाते कौन्तेय ! किस तरह –
हैं साधक अविरोधी ।।184।।

यद्यपि होती है 'पत्नी' की–
यथा धर्म से दूरी ।
किन्तु ' धर्म–पत्नी' गृह की–
सब करे व्यवस्था पूरी ।।185।।

जिन पुरूषों के धर्म–अर्थ हैं –
'काम' साथ मिल जाते ।
निश्चय ही पुरूषार्थ–चतुष्टय,[1]
वे गृहस्थ पा जाते ।।186।।

1– पुरूषार्थ चतुष्टय– धर्म–अर्थ–काम–मोक्ष ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'अक्षय—नरक' बताओ जग में
किस मानव को मिलता ?
उत्तर शीघ्र प्रकाशित करिये,
मत कीजिए शिथिलता ??187।।

जो मनुष्य याचक को पहले—
अपने पास बुलाता ।
फिर उसको न्यक्कार[1] करे,
वह नरकलोक को जाता ।।188।।

वेद—शास्त्र—द्विज—देव—तीर्थ में,
मिथ्या दोष लगाता ।
अक्षय्य नरक सदा वह दंभी—
निज कर्मों से पाता ।।189।।

होकर जो धनवान लोभवश —
दान नहीं कर पाता ।
'मेरे पास कुछ नहीं कहकर'—
याचक को ठुकराता ।।190।।

धन का किंचित भोग और—
उपयोग नहीं कर पाये ।
अक्षय नरक—लोक में पापी—
कृपण अवश्य सिधाये ।।191।।

कौन शत्रु मानव के होते
उनके नाम गिनायें ?
कौन नष्ट करते हैं उनको,
राजन प्रकट बतायें ??192।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

1— न्यक्कार — इन्कार, निषेध

अनय, अभाव,अज्ञता, आलस
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मानव–शत्रु कहाते ।
क्षत्रिय, वैश्य, विप्र,श्रम–साधक
क्रमशः उन्हें भगाते [1] ।।193।।

शास्त्र–ज्ञान, स्वाध्याय, वृत्त से,
या ऊँचे कुल द्वारा ।
ब्राह्मणत्व मिलता बोलो,
किसका कर प्राप्त सहारा ??194।।

धर्मराज बोले–"ब्राह्मण पद–
का करने निर्धारण ।
कुल–स्वाध्याय–शास्त्र ही केवल
नहीं प्रमुख हैं कारण ।।195।।

ब्राह्मणत्व का सदाचार–
सम्यक् निर्धारण करता ।
मानव निज उत्तम चरित्र से,
उसको धारण करता ।।196।।

केवल शास्त्र–ज्ञान से तो,
'साक्षर' है 'राक्षस' बनता [2] ।
यदि चरित्र में रहे व्यक्ति के,
रंच नहीं पावनता ।।197।।

दुश्चरित्र पढ़ चार वेद भी,
है अन्त्यज से बढ़कर[3] ।
इन्द्रिय–जयी ब्राह्मण तप में,
अग्नि–होत्र में तत्पर ।।198।।

1– क्षत्रिय अन्याय का, वैश्य अर्थाभाव का, ब्राह्मण अज्ञान का और श्रमजीवी आलस्य का विनाश कर देते हैं ।

2– आद्यान्ताक्षर विपर्ययात साक्षरः एव राक्षसः । अर्थात प्रथम और अन्तिम बर्ण के परस्पर परिवर्तन के नियम से साक्षर ही राक्षस बन जाता है । 3– आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधुर वचन से क्या मिलता ?
है क्या मिलता चिन्तन से ?
मित्रों से क्या लाभ ?
लाभ क्या धर्मनिष्ठ जीवन से ??199।

"सबको प्रिय होता" मृदु—भाषी,
चिन्तन "सुफल—प्रदाता ।
मित्रों से "सुख" , धर्मनिष्ठ —
जीवन से "सद्गति" पाता ।। 200।।

सृष्टि किसे कहते हैं ?
इसको, बोलो, कौन बनाता ?
रहता कहाँ ? और है उसका—
हमसे कैसा नाता ??201।।

जिसका होता 'सृजन' सृष्टि' वह,
इसको ईश बनाता ।
रहता है सर्वत्र[2], हमारा—
पिता—पुत्र का नाता ।।202।।

चलता और नहीं भी चलता,
है अति दूर, निकटतम ।
अत्र तत्र सर्वत्र कौन है,
अन्दर वाहर सक्षम ।।203।।

ईश्वर ही चल, अचल, दूर है—
वही निकटतम प्रभु है ।
अत्र तत्र सर्वत्र वही,
अन्दर वाहर थिर विभु है ।।204।।

---

1. सृजनात् सृष्टिः" अर्थात जिसका निर्माण हो वहर सृष्टि कहलाती है ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

2. ईशावास्यमिदं सर्वम्" यह सारा ब्रह्माण्ड ईश्वर से आवृत है

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वर का क्या रूप ?
एक है या अनेक, बतलायें ।
उसके गुण सब एक–एक कर,
हमको नृपति गिनायें ??205।।

निर्गुण, निरंकार' है, ईश्वर,
एक, अनेक नहीं है ।
उसका लक्षण वेद–शास्त्र में,
मिलता लिखित यही है ।।206।।

ईश्वर 'सत्य' 'समान' सदा,
है तीन काल में रहता ।
भूत–भविष्यत्–वर्त्तमान में–
रंच न रूप बदलता ।।207।।

वह "चैतन्यस्वरूप" कार्य सब,
करता सोच समझकर ।
ज्ञान–दृष्टि सम्पन्न, न्यूनता
मिलती कहीं न तिलभर।।208।।

विभु, "आनन्दस्वरूप" न दुख का,
किंचित् लेश रहा है ।
इसीलिए "सच्चिदानन्द"
उसको विश्वेश कहा है ।।209।।

"निराकार" है प्रभु, उसका–
कोई आकार नहीं है ।
"व्यापक है सर्वत्र", असीमित–
वह साकार नहीं है ।।210।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जग में प्रभु जैसा सशक्त
कोई बलवान नहीं है ।
"सर्वशक्ति सम्पन्न" स्वयं सा,
ईश्वर मात्र वही है ।।211।।

सदा "न्याय" करता, सबको–
कर्मानुसार फल देता ।
अति "दयालु" वह "दीनबन्धु" है,
"देव" नहीं कुछ लेता ।।212।।

सदा 'अजन्मा" "विभु" 'पवित्र' 'प्रभु',
नित है 'अजर' 'अमर' है ।
सदा 'अभय'–प्रद' जग को, 'निर्भय';
'अनुपम' 'सर्वेश्वर' है ।।213।।

'ब्रह्म' 'अनादि' 'अनन्त' 'ईश' वह–
'सर्वाधार' निरन्तर ।
है कण–कण में व्याप्त सर्वदा;
'निर्विकार' 'विश्वंभर' ।।214।।

उस "सर्वान्तर्यामी" प्रभु ने
सारी सृष्टि बनाई ।
पालन वही किया करता,
अद्भुत उसकी प्रभुताई ।।215।।

'ब्रह्मा–विष्णु' कौन है ?
किसको 'रूद्र' किसे 'शिव' कहते?
कौन 'गणेश' और 'अज', किसको–
महादेव हैं कहते ??216।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

एक ईश ही 'परम-ब्रह्म' 'विभु',
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
'प्रणव' गया कहलाया ।
उसके कार्य अनेक वेद ने,
जिनको बहुधा गाया[1] ।।217।।

ईश, अकाय, शुक्र, कवि, व्यापक
अव्रण, पाप-रहित है ।
वही स्वयंभू परिभू यन्ता,
उसमें सृष्टि निहित है ।।218।।

सृष्टि-सृजन 'ब्रह्मा बन करता,
करें विष्णु बन पालन ।
'रुद्र' दण्डकर्त्ता प्रभु;
'शिव' करता करूणा-संवाहन ।।219।।

वही अजन्मा, अज, गणेश,
गणपति, विघ्नेश, विधाता ।
देवों में सबसे महान वह-
महादेव कहलाता ।।220।।

तेंतिस कोटि देवता होते,
कौन-कौन बतलायें ?
उनके नाम हमें अब राजन !
पृथक-पृथक गिनवायें ??221।।

'अष्ट-महावसु'[2] और 'रूद्र'-
-एकादश[3] शास्त्र बताते ।
'द्वादश-रवि'[4] मिल 'इन्द्र-प्रजापति'[5]
है तेंतिस हो जाते ।।222।।

---

1. एकं सद्विप्राः बहुधा वदन्ति । अर्थात् एक ही परमात्मा को उसके कार्यों एवं गुणों के आधार पर विद्वान लोग अनेक प्रकार से वर्णित करते हैं ।
2. अष्ट महावसु-8- (पंच महाभूत+रवि+शशि+नक्षत्र)
3. एकादश रुद्र- 11- (पंचज्ञानेन्द्रिय+पंचकर्मेन्द्रिय+मन)
4. द्वादश आदित्य- 12- (बारह मासों के सूर्य)
CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
5. इन्द्र-प्रजापति- 02- (इन्द्र तथा प्रजापति) । कुल 33 कोटि अर्थात श्रेणी ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वसुओं के नृप! नाम,
रूद्र–आदित्यों के बतलायें ।
उन सबका वैदिक स्वरूप कह–
मेरी भ्रान्ति मिटायें ।।223।।

"भू–जल–अनल–अनिल–नभ–रवि–शशि,
ग्रह" पर प्राणी रहते ।
अतः इन्हें ही वेद–शास्त्र,
सद्ग्रन्थ 'अष्ट–वसु' कहते ।।224।।

ज्ञान–कर्म–मय दश–इन्द्रिय,
एकादश मन मिल जावें ।
वही "रूद्र"[1] बन मृत्यु काल में
सबको सदा रूलावें ।।225।।

द्वादश मासों के रवि ही,
"द्वादश–आदित्य" कहाते ।
करते ऋतु–परिवर्तन वे ही,
नूतन सृष्टि बनाते ।।226।।

इन्हीं रूद्र–वसु–आदित्यों से,
इन्द्र प्रजापति मिलकर ।
बनते तेंतिस–कोटि देव,
कहते सब विज्ञ सुधी नर ।।227।।

':कर्म' किसे कहते हैं ?
किसको हैं "पूजा–व्रत" कहतें ?
कौन श्रेष्ठ दोनों में ?
किससे देव तुष्ट हैं रहते ??228।।

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

1– "रु शब्दे" धातु से रूलाने के अर्थ में "रूद्र" शब्द बनता है।

जो "कर्त्तव्य सुकर्म धर्म" है
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कर्म वही कहलाता ।
जिसे न करने से मानव,
मानव न कभी बन पाता ।।229।।

समवयस्क – लघु – गुरू होवे,
पंडित–सज्जन या दुर्जन ।
'यथायोग्य–व्यवहार–मान करना' ;
कहलाता पूजन ।।230।।

"कर्म"[1] और "पूजा"[2] दोनो,
सर्वोत्तम धार्म बताते ।
"पूजा ही सत्कर्म"
"कर्म–उत्तम पूजा" कहलाते ।। 231।।

कोई छोटा बड़ा न, दोनों–
उत्तम–धार्म विदित हैं ।
दोनों के ही परिपालन से,
होते देव मुदित है। ।।232।।

'यज्ञ' किसे कहते हैं ?
इसका रूप नृपति बतलायें !
होता यज्ञ "श्रेष्ठतम" क्यों कर ?
सप्रमाण समझायें ??233।।

"सभी श्रेष्ठतम कर्म–यज्ञ मय";[3]
"यज्ञ विष्णु–मय होता"[4] ।।
यज्ञ सर्व–व्यापक विभु,
इससे सृजन सृष्टि का होता ।।234।।

1– कर्म– "डुकृञ् करणे" धातु से कर्म (अर्थात् करणीयकार्य) शब्द बनता है।
2– पूजा–'पुञ्'पूजायां यथायोग्य सत्कारे" अर्थात यथा योग्य व्यवहार और सेवा पूजा है ।
CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
3– यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म । 4– "यज्ञो वै विष्णुः" ।

सभी वर्ण वैशिष्ट्य युक्त हैं,
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सभी आर्य कहलायें ।
सर्व-श्रेष्ठ ब्राह्मण क्यों होता,
उसके गुण बतलायें ??235।।

सत्य-दान-तप-शील-मृदुलता-
दया-क्षमा गुण सारे ।
विप्र वही जो वेद-ज्ञान हित,
ब्रह्मचर्य-व्रत धारे ।।236।।

जिसमें यह गुण वसें, उसे ही,
'ब्राह्मण' हम सब जानें ।
'विप्र नहीं, यदि गुण विहीन',[1]
यदि गुणी, शूद्र मत मानें [2] ।।237।।

जिसमें जैसे गुण होते-
वह वैसा ही बन जाता ।
गुण स्वभाव कर्मानुसार नर,
वर्ण प्रतिष्ठा पाता 3।।238।।

गुण-स्वभाव-आचार-कर्म-
होते हैं निकष-ग्रावा ।
इनसे करें परीक्षा नर की,
कभी न हो पछतावा ।।239।।

जन्मकाल में सभी शूद्र होते-
यह शास्त्र बताते ।
वेद-शास्त्र की शिक्षा पाकर,
ही ब्राह्मण बन पाते ।।240।।

---

1. ब्राह्मण के गुणों से विहीन व्यक्ति को ब्राह्मण वर्ण का न माना जाये ।
2. यदि शूद्र में ब्राह्मणों के समस्त गुण हो तो वह शूद्र न माना जाये । (महाभारत वन-पर्व)
CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.
3. वर्ण, कर्म-गुण-स्वभाव-आचार के अनुसार होते हैं ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'प्राण' यज्ञ का क्या, इसकी–
'आत्मा' है क्या बतलायें ?
'होता' कौन, कौन 'ब्रह्मा' ?
क्या होती हैं समिधायें ??241।।

"इदं नमम" है प्राण, यज्ञ का;
"स्वाहा" आत्म बतायें।
होता "जीव"; "पुरुष" है ब्रह्मा;
"त्रिगुण–प्रकृति" समिधाएँ।।242।।

किस नर को राजन ! रजनी में,
निद्रा रंच न आये ?
और कौन जो निभृत होकर,
भूतल पर सो जाये ??243।।

दुर्बल, साधन–हीन, नष्ट धन,
कामी–नर दुर्जन को।
निद्रा आती नहीं तके जो,
सदा पराये धन को।।244।।

निर्धन भले, न ऋणी, जीविका,–
तोषामृत बरसाती।
सोता चादर तान, न जिसको–
चिन्ता तनिक सताती।।245।।

सुखी कौन ? आश्चर्य यहाँ क्या ?
सुपथ नृवर ! बतलायें ?
जग में क्या शाश्वत वार्त्ता है ?
उत्तर सपदि सुनायें ??246।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भले पाँचवें छठवें दिन ही,
शाक–पात हो पचता ।
नहीं प्रवासी, अपने घर में ही,
है जो नर बसता ।।247।।

जिस पर ऋण न किसी का किंचित्–
भले न घर में धान है ।
वही यहाँ नर "सुखी"–
शान्तिमय उसका ही जीवन है ।।248।।

आदिकाल से प्रतिदिन प्राणी,
जग में मरते रहते ।
शेष मनुज सुस्थिर जीवन की,
हैं प्रत्याशा करते ।।249।।

इससे बढ़कर भूतल में;
आश्चर्य कौन हो सकता ?
नित्य देखता मृत्यु, किन्तु–
फिर भी चाहता अमरता ।।250।।

वेद–शास्त्र षट–दर्शन का है–
भिन्न–भिन्न मत अपना ।
ऋषि मुनियों की भी होती है–
अपनी पृथक कल्पना ।।251।।

धर्मतत्त्व अति गूढ़, सूक्ष्म–
है जिस पर विज्ञ फिसलते ।
"वही पंथ पावन है जिसपर–
महापुरुष हैं चलते [1] ।।252।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

'1– 'महाजनो येन गतः सः पन्थाः ।"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महा–मोह–मय जग कड़ाह सा,
यक्षराज ! यह सारा ।
पकता रहता सूर्य रूप अति–
चंड–अग्नि के द्वारा ।।253।।

रात्रि–दिवस रूपी इन्धन से,
जलता त्रय तापों से ।
सदा उबलता रहता अपने,
नारकीय पापों से ।।254।।

मास और ऋतु–परिवर्त्तन की,
कलछी कर में लेकर ।
महाकाल है पका रहा,
ब्रह्माण्ड सभी यह नश्वर ।।255।।

जन्म–मृत्यु के चक्र–व्यूह में,
कर्म–भोग के फल में ।
फँसना ही है–"प्रमुख वार्त्ता"–
व्याप्त सकल भूतल में ।।256।।

सत्य–दान में कौन, अहिंसा–
गुर्वी या प्रिय भाषण ?
किसका अधिक महत्व ?
बताओ शास्त्रों का मत राजन ??257।।

"सत्य–दान–प्रियवचन–अहिंसा"–
चारों गुण उत्तम हैं ।
कोई गुरुतर नहीं किसी से,
और न कोई कम हैं ।।258।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देश–काल–प्रस्तुति से कोई,
गुरु या लघु हो जाता ।
चारों गुरु कार्यापेक्षा से,
कोई लघु न दिखाता ।।259।।

कौन "बद्ध" है, और कौन है,
"मुक्त" यहाँ कहलाता ?
घोर "नरक" क्या राजन्,
किसको "स्वर्ग" बताया जाता ??260।।

"विषयासक्त"बद्ध, "निर्विषयी" –
जीव मुक्त बन जाता ।
मल–मलीन यह देह" नर्क,
"तृष्णा–क्षय" स्वर्ग कहाता ।।261।।

लौकिक मोह छुड़ाकर धर्मज !
मोक्ष कौन दिलवाता ।
और कौन महनीय–महाव्रत !
स्वर्ग प्राप्त करवाता ??262।।

"आत्म–ज्ञान" ही, मोह–ध्वस्त कर,
मोक्ष हमें दिलवाता ।
तथा "अहिंसा" परम धर्म ही–
स्वर्ग प्राप्त करवाता ।।263।।

कौन यहाँ नर सुख से सोते,
जगते कौन निरन्तर ?
कौन शत्रु वे ही मानव के,
बनते मित्र प्रियंकर ??264।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''समाधिस्थ'' सुख से सोते,
''सत्–असत्–विज्ञ'' जग जाते –
''दुष्ट इन्द्रियाँ'' शत्रु,
जितेन्द्रिय उनको मित्र बनाते ।।265।।

कौन "दरिद्र" नृपति ! भूतल में,
''धनी'' कौन कहलाये !
कौन मनुज, जीवित होकर भी,
शव समान दिखलाये ??266।।

''तृष्णा–दास'' दरिद्र, धनी–
''संतोष–सुधा जो पीता'' ।
यक्षराज ! ''उद्यम–विहीन'' ही,
शव समान है जीता ।।267।।

"जड़–बंधन" है कौन जिसे नर,
तोड़ न किंचित पाता ?
"अन्धा" कौन, नेत्र पाकर भी–
जिसको कुछ न दिखाता ??268।।

"लौकिक–मोह ममत्व–जाल",नर–
तोड़ न किंचित् पाता ।
''कामातुर'' ही तो महान्ध है,
जिसको कुछ न दिखाता ।।269।।

सच्चा "गुरू" है कौन, "शिष्य"–
आदर्श कौन कहलाये ?
''महारोग'' क्या नृवर !
सफल "ओषधि" क्या वैद्य बताये ??270।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हितोपदेशक" ही गुरू सच्चा,
शिष्य 'अनुज्ञाकारी"
"भव–बन्धन" है रोग, "योग–तप"–
है ओषधि दुखहारी ।।271।।

सबसे बड़ा कौन "आभूषण",,
"पावन–तीर्थ" बतायें ।
क्या "श्रवणीय" सतत् अति हितकर,
राजन् ! कह समझायें ??272।।

"शील" महाभूषण, "निर्मल मन"–
पावन तीर्थ कहाये ।
"वेद शास्त्र–गुरू–सदुपदेश,–
श्रवणीय गये बतलाये ।।273।।

धर्म मार्ग के सूत्र कौन है,
मोक्ष–प्राप्ति संसाधक ?
किन विभूति–सद्‌गुण के स्वामी–
हैं सुसन्त आराधक ??274।।

"ज्ञान–दान–संतोष–सुसंगति",
मोक्ष–मार्ग के साधक ।
"कोह–मोह–रागदि–विरत–
निर्द्वन्द्व" सन्त–आराधक ।।275।।

कौन "महा ज्वर", नर समाज में,
"मूर्ख" कौन कहलाता ?
"उत्तम जीवन" क्या, नर का–
"कर्त्तव्य" बताया जाता ??276।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''चिन्ता'' है महान् ज्वर,
''अविवेकी'' ही मूर्ख कहाता ।
''दोष–रहित जीवन'', उत्तम–
''सद्वृत्त'' बताया जाता ।।277।।

क्या ''विद्या'' है, ''बोध'' किसे–
राजन् ! गुरूजन बतलाते ?
क्या सर्वोत्तम–लाभ'' जगत पर–
विजय ''कौन नर'' पाते ??278।।

मोक्षप्रदा ''विद्या'', सुबोध–
''परमात्म–प्राप्ति'' कर वाये ।
परमलाभ ''प्रज्ञान'', जगजयी–
''जो मन पर जय पाये'' ।।279।।

''दिग्विजयी'' है कौन वीरवर,
भूतल पर कहलाता ?
''अपराजेय'' धीर जिसको
जग सारा शीश नवाता ??280।।

दिग्विजयी वह ''जहाँ–
काम–तूणीर व्यर्थ बन जाता'' ।
अपराजेय, ''जहाँ निष्फल,
ललना–कटाक्ष हो जाता'' ।।281।।

कौन ''महाविष'', जिसको पीकर
होता ''कौन दुखारी'' ?
''पूजनीय'' हैं कौन, और हैं–
''धन्य'' कौन नर नारी ??282।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''विषय भोग'' ही महागरल,
पी ''विषयी'' परम दुखारी ।
पूजनीय ''प्रभु भक्त'', धान्य–
जग में ''प्रभु–प्रेम पुजारी'' ।।283।।

''अकरणीय'' क्या कार्य, और–
हैं क्या ''करणीय'' कहायें ?
क्या है ''दुख का मूल'' –
नृपति ! सत्त्वर हमको बतलायें ??284।।

अकरणीय ''हिंसादिक'' हैं,
करणीय ''धार्म–परिपालन'' ।
''चिन्ता' ही है यक्षराज !
सर्वथा दुखों का कारण ।।285।।

''दुरावाप्य'' क्या ज्ञान, और क्या–
''दुस्त्यज'' इस भूतल पर ?
कौन्तेय ! कहिए जगती में,
''कौन निन्द्य पशुवन्नर'' ??286।।

दुरावाप्य ''नारी मन'', दुस्त्यज–
है ''नैराश्य'' मही पर ।
''विद्या–धर्म–विहीन'' सदा, –
जग में निन्दित पशुवन्नर ।।287।।

''किसके साथ न संग'' चाहिए,
हमें कभी भी करना ?
और ''सुसंगति'' कभी न किनकी,
हमें चाहिए तजना ??288।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

मूर्ख, नीच, हिंसक, पापी की
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तजिए सदा कुसंगति ।
अपरिहार्य रूपेण ग्राह्य् है,
"सुधी–साधु–गुरू संगति" ।।289।।

"लघुता" मूलक है क्या, नर को–
कौन "महान" बनाता ?
किससे "जन्म" प्रशस्य,
"मरण" है किससे श्लाध्य कहाता ??290।।

लघु करती "याचना", "अयाचन"–
नर को श्रेष्ठ बनाता ।
"देश–भक्ति" से जन्म, मरण–
है "बलि से" श्लाध्य कहाता ।।291।।

कौन "मूक" है, "वधिर" कौन–
प्राणी राजन ! भू पर है ?
"कौन नहीं विश्वास पात्र",
इस जगती तल में नर है ??292।।

वेद–शास्त्र–हरि–गुरू निन्दा सुन,
शान्त बैठ चुप रहता ।
वही "मूक", जो अनय–अनृत का,
मूक–समर्थन करता ।।293।।

तथ्य–पथ्य–नय–नीति–सुधा का,
पान न जिसको भाता ।
यक्षराज ! श्रवण–क्षम भी वह,
"बधिर" सदा कहलाता ??294।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असत्–अनीति–समर्थक, हिंसक–
निन्दक–पाप–प्रवर है ।
जगती में ''विश्वास पात्र'',
वह कभी न राजन् नर है ।।295।।

अद्वितीय क्या तत्त्व, ''कर्म–
अत्युत्तम'' क्या नरवर है ?
कौन ''त्याज्य–सुख'' और ''दान–
सर्वोत्तम'' क्या भू पर है ??296।।

अद्वितीय ''शिवतत्त्व'', कर्म है–
''सदाचरण'' अत्युत्तम ।
त्याज्य ''वासना–सुख'' यक्षेश्वर !
''अभयदान'' सर्वोत्तम ।।297।।

''महाशत्रु'' हैं कौन मनुज के,
जो दुर्जय कहलाते ?
''मिले भोग से तृप्ति न किसको'',
क्या ''दुख–मूल'' बताते ??298।।

''काम–क्रोध–लोभानृत–तृष्णा,–
दुर्जय–शत्रु कहाते ।
''कामी'' रहें अतृप्त, ''मोह–
ममता'' दुख–मूल बताते ।।299।।

क्या मुख का, कर्णों का–
कर का ''आभूषण'' कहलाता ?
''सत्य–धर्म'' क्या, ''कर्म'' जिसे–
कर शोक–रहित हो जाता ??300।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"विद्या" मुख का, "श्रुति" कर्णों का
"दान" कराभूषण है ।
धर्म "भूत–हित", "ईश–भक्ति" ही–
हरे शोक–दूषण है ।।301।।

"शल्य भयंकर", कौन, कौन हैं–
"जगद्वन्द्य" कहलाते ?
"दस्यु" कौन हैं, कौन" सभा में–
सन्नर शोभा पाते ??302।।

"शल्य–भयंकर" "निज जड़ता"–
"गुरू–सन्त" वन्द्य कहलाते ।
"दुर्वासना" दस्यु–दल, शोभा–
"सुधी" सभा में पाते ।।303।।

"सुखद मातृवत" कौन, दान से–
जो प्रतिपल बढ़ती है ?
रूद्ध, प्रवाह–रहित जल सी,
बिन दान दिये घटती है ??304।।

"विद्या" सुखद मातृवत् नित प्रति,
जो सुदान से बढ़ती ।
पर ईर्ष्यालु हृदय–गृह में घिर–
प्रतिबन्धित हो घटती ।।305।।

किससे प्राणि–मात्र को अति भय,
"दुर्जय" कौन जगत में ?
"सच्चा–वन्धु" कौन है, "सच्चा"–
पिता" कौन श्रुति–मत में ??306।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"निन्दा–लोकवाद" से अतिभय,
"काम" शत्रु दुर्जय है ।
"वन्धु", साथ दे संकट–भय में,
"पालक" पिता–सदय है ।।307।।

कौन "महापशु" इस भूतल पर,
कौन "महाविष–भाजन" ?
"दुर्लभतम" हैं कौन जगत में–
सत्त्वर कहिए राजन् ??308।।

"पापी–मूढ़" सदैव महापशु,
"मोह" महाविष–भाजन ।
दुर्लभतम "सदगुरू–सुसंग–
तृष्णा–क्षय, हरि–आराधन" ।।309।।

विद्युत्वत् "चंचल" क्या जग में,
किससे "मोह" विसारें ?
राजन् क्या "करणीय" कंठ–गत–
जब तक प्राण हमारे ??310।।

"धन–यौवन–जीवन" यह चंचल,
"जग से" मोह बिसारें ।
"पाप तजें", "हरि भजें" कंठगत,
जब तक प्राण हमारे ।।311।।

कौन पुरुष भूतल में,
गूँजे जिसका नाद अमर है ?
और जगत में पौरव ! सबसे–
धनी कौन नर–वर है ??312।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूतल से ले देवलोक तक,
लहरे पुण्य–पताका ।
जग में सुखद प्रसार सदा,
जिसकी यश–सुरभि–सुधा का ।।313।।

जो सबको प्रिय है, जिसको–
प्रियतम लगता जग सारा ।
वही आर्य, सत्पुरूष वही है,
प्रभु का वही दुलारा ।।314।।

जो सुख–दुख–द्वन्द्वों में,
विजय–पराजय, प्रिय–अप्रिय में ।
भूत–भविष्यत्–वर्त्तमान में,
दृढ़ है निज निश्चय में ।।315।।

निस्पृह–शान्त–प्रसन्न सर्वदा,
योगी, सतत्–अकामी ।
सुधी जितेन्द्रिय, ब्रह्मचर्य–रत,
है धनिकों का स्वामी ।।316।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपसंहार

धर्मराज के शास्त्र–नीति–
सम्मत सुन समुचित उत्तर ।
होकर अतिशय तुष्ट, लगा–
यों कहने यक्ष वारिचर ।। 1।।

'नृप ! तुमने मेरे प्रश्नों के,
उत्तर उचित बताये ।
अतः तुम्हारा प्रियतम जीवित,
एक अनुज हो जाये ।। 2।।

कहा युधिष्ठिर ने–"मेरा–
वैमात्र बन्धु लघु प्यारा ।
जीवित होवे नकुल,
निवेदन है यह यक्ष ! हमारा ।।3।।

बोला यक्ष– "नृपति तुमको तो –
भीमसेन अति प्यारे ।
अति बलिष्ठ जगती तल में,
जननी के हृदय दुलारे ।। 4।।

और विश्वजित् श्रेष्ठ धनुर्धर,
प्राणवान व्रत धारी ।
अर्जुन अनुज सदा जिस पर,
जय आशा टिकी तुम्हारी ।। 5 ।।

कहो नृवर ! तज भीमार्जुन को –
क्या निज मन में ठानी ?
नकुल– भ्रात के प्रत्युज्जीवन,
में क्या छिपी कहानी ?? ।। 6 ।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मराज नें कहा–''धर्म–
सारे जग में प्रसरा है ।
धर्म–धुरी पर युगों–युगों से
सुस्थित बसुन्धरा है ।।7।।

जो नर धर्म –हितार्थ समर्पित–
अपने प्राण करेगा ।
संकट में आ धर्म स्वयं ही,
उसका त्राण करेगा[1] ।।8।।

तन–धन–धाम–बन्धु–बान्धव सब,
त्याग अभी कर सकता ।
किन्तु धर्मच्युत होकर मैं,
जग में न कभी रह सकता ।। 9 ।।

दया क्षमा–समता–ममता ही,
परम–धर्म कहलाता "
सत्य–अहिंसा–प्रेम–भक्ति से,
प्रभु दर्शन नर पाता ।। 10 ।।

सबसे प्रथम नकुल जल लेने,
हेतु यहाँ पर आया ।
मैने ही विश्वास –प्रेम से,
उसको देव ! पठाया ।। 11 ।।

बांछनीय सर्वोपरि मुझको,
जीवन बन्धु नकुल का ।
वहीं बनेगा मात्र दीप,
माता माद्री के कुल का ।। 12 ।।

CC-0 Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

1– धर्म एवं हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षतः"

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नकुल जिये तो पुत्रवती,
माता माद्री हो जाये ।
पाकर मुझे तथा कुन्ती का,
सारा दुःख धो जाये ।। 13 ।।

इस प्रकार हों पुत्रवती,
दोनो पूज्या माताएँ ।
नकुल जिये तो पूर्ण हमारी,
होवें अभिलाषाएँ ।। 14 ।।

यक्षराज ! तुमको मैं अपना,
हार्दिक मत बतलाऊँ ।
भले सभी कुछ जाय चला,
पर धर्मशील कहलाऊँ ।।15।।

अतः निवेदन पुनः आपसे–
है करबद्ध हमारा ।
जीवित होवे अनुज नकुल,
जो हमें प्राण से प्यारा ।। 16 ।।

धर्म–नीति–युत सुन नृप की,
समता–ममता–मय वाणी ।
शास्त्र – ज्ञान – सम्पुष्ट न्याय–,
सम्मत अतिशय कल्याणी ।।17।।

नृपति युधिष्ठिर के उत्तर से
धर्म–निष्ठ, ध्रुव–धृति से ।
ज्ञान–विवेक–सनेह–शील–
सौहार्द्र–सनी शुचि मति से ।। 18।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सरल–विनीति से, कृति से,
व्यवहृति से, नति से, संस्तुति से ।
यक्षराज संतुष्ट हो गये,
ममता–मय प्रस्तुति से ।। 19 ।।

मृतवत् पतित यक्ष नें चारों
पाण्डव त्वरित जिलाये ।
नेत्र खोलकर बैठ गये ,
ज्यों सोते से जग आये ।। 20 ।।

कहा नृवर ने तव प्रणाम कर,
"अपना भेद बतायें,
तेज–पुंज बल–बुद्धि–धाम हैं –
कौन प्रभो ! बतलायें ??" ।। 21 ।।

कहा प्रकट हो तुरत 'धर्म' ने –
"मैं हूँ पिता तुम्हारा ।
धर्म–परीक्षा लेने हित यह,
रचा उपक्रम सारा ।। 22 ।।

शम–दम–तप–व्रत–शौच–सरलता–
दया–धर्म –धृति द्वारा ।
प्रीति–रीति, नय–नीति मार्ग से,
हो प्रत्यक्ष हमारा ।। 23 ।।

सफल हुआ तू पुत्र !
धर्म में अविचल निष्ठा तेरी ।
तुझे मिलें पुरूषार्थ – चतुष्टय,
यही आशिषा मेरी ।। 24 ।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम–क्रोध–मद–मोह–लोभ–पर
पाओ विजय भुवन में ।
सत्य–दान–तप–त्याग–याग–
निष्ठा हो अविचल मन में ।। 25 ।।

जब तक रवि–शशि भासमान,
नभ में सुस्थिर ध्रुव तारा ।
करता रहे सुपथ आलोकित,
पावन चरित तुम्हारा ।। 26 ।।

सभी सुखी हों सब निरोग हों
सबको पूर्ण अभय हो ।
कहीं न दुःख का लेश,
धर्म की पग पग सदा विजय हो ।। 27 ।।

++++++++++++++++++++

असतो मा सद् गमय ।
तमसो मा ज्योतिर्गमय ।
मृत्योर्मामृतं गमय ।।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

++++++++++++++++++++

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि–परिचय

आचार्य कृष्ण कुमार मिश्र 'चंचल'

माता– श्रीमती महादेवी,
पिता– स्व0 श्री बसन्त लाल मिश्र
पत्नी– उर्मिला मिश्रा एम0ए0 (द्वय)
जन्म तिथि– फुलहारी द्वितीया, फागुन सं0 1999वि0
जन्म स्थान– ग्राम तिहार पुवायां, शाहजहांपुर
सम्प्रति– कृष्ण कुंज,बिलसंडा,पीलीभीत (उ.प्र.)

दूरभाष– 9760354031

शिक्षा एवं उपाधियां–

एम.ए. त्रय (अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृत), आचार्य द्वय (साहित्य एवं पुराणेतिहास), साहित्य रत्न, साहित्यालंकार, सिद्धान्तवाचस्पति, बी0एड0, शास्त्री द्वय (साहित्य एवं सिद्धान्त), विशारद त्रय (धर्म, साहित्य, रामायण) । साहित्य–पुरोधा इत्यादि ।

रचना की भाषाऐं– हिन्दी संस्कृत, अंग्रेजी । प्रेरणा–स्रोत– माता जी एवं अग्रज स्व0 रामावतार मिश्र।

सम्प्रति– अवकाश प्राप्त प्रधानाचार्य (गा0स्मा0इण्टर कालेज, बिलसंडा, पीलीभीत ।

रचना विधाएँ– लोकगीत, गीत, भजन, धनाक्षरी, सबैया, कुंडलिया, दोहे, मुक्तक, श्लोक, अंग्रेजी में फुटकर काव्य इत्यादि ।

साहित्य साधना– पठन, पाठन, लेखन, उद्‌बोधन, कवि गोष्ठी इत्यादि ।

सम्बद्धता– शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं साहित्यिक संस्थानों में दायित्तव।

प्रकाशित ग्रन्थ– दयानन्द शतक, राष्ट्र मन्दिर (राष्ट्रीय काव्य), धर्म जिज्ञासा (खण्ड काव्य)

अन्य माध्यम– 1– पत्र– वीर अर्जुन, अमर उजाला, दैनिक जागरण, आदर्शवाणी इत्यादि में ।

2– काव्य संकलन– एक पुष्प और परिजात का (बीसलपुर) अभिनव चिन्तन (काशीपुर), साहित्य–दर्शन (पीलीभीत), विश्वास (रामपुर), पंखुड़ियां (बदायूं), ब्रह्मजिज्ञासा (दिवरिया–पीलीभीत), मेरा वतन (पीलीभीत), संगमन–1 (बिलसंडा–पीलीभीत) इत्यादि ।

अप्रकाशित रचनाएँ– अध्यात्म दोहा सप्तशती, बिलसंडा–शतक, गर्दभ–लत्तीसी, लोक गीतांजलि, गीत–मलिका, छन्दोमंजरी, वताशोभौजी (कहानी संग्रह), स्फुट काव्य (हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत) ।

दायित्व– 1. पूर्व अध्यक्ष कला परिषद एवं सह सम्पादक विभा पत्रिका (शुक0 डिग्री कालेज, शाहजहांपुर) 2– अध्यक्ष– हिन्दी साहित्य संगम एवं संरक्षक संस्कार भारती (बिलसंडा शाखा) ।
3– पूर्व प्रधान– आर्य उप प्रतिनिधि सभा पीलीभीत । 4– सम्पादक– संगमन–1 (काव्य संकलन)
5– अनेक शैक्षिक, सामाजिक, साहित्यक सांस्कृतिक एवं धार्मिक संस्थाओं में ।

CC-0. Gurukul Kangri Maha Vidyalaya Collection.

सम्मान– कई शैक्षिक, धार्मिक, सामाजिक साहित्यिक संस्थाओं द्वारा ।
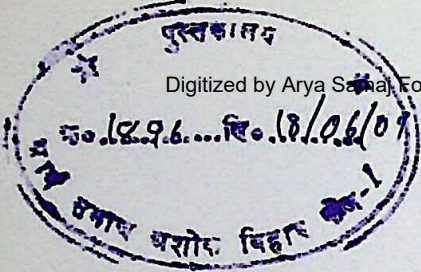
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्य कृष्ण कुमार मिश्र "चंचल"

प्रकाशित पुस्तकें

१. दयानन्द शतक
२. राष्ट्र मन्दिर (राष्ट्रीय काव्य)
३. धर्म जिज्ञासा (खण्ड काव्य)
४. संगमन (काव्य-संकलन)

शीघ्र प्रकाश्य

१. अध्यात्म दोहा सप्तशती
२. गर्दभ लत्तीसी
३. लोक-गीतांजलि
४. गीत-मालिका
५. छन्दो-मंजरी
६. बताशो भौजी (कहानी संग्रह)
७. स्फुट काव्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

मुद्रक : गुप्ता ऑफसेट प्रैस, बीसलपुर मो. 9358116327